आंखों में तैरते भविष्य के सपने

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 12 -18 April 2026

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

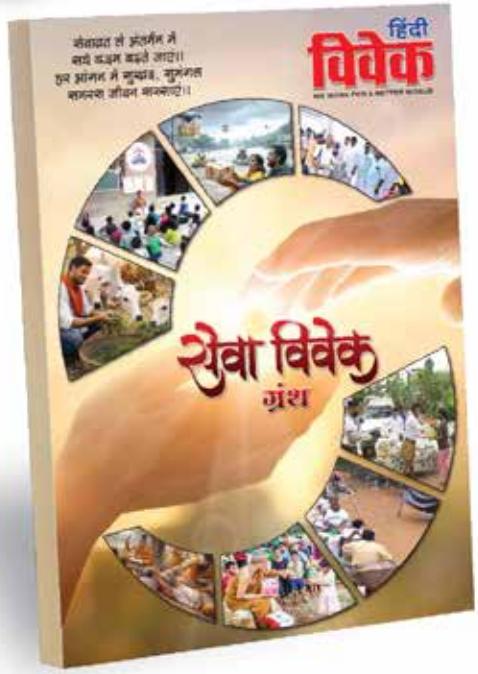

प्रकाशन पूर्व मूल्य
600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

अनुक्रमणिका

विकल्प टटोलते बच्चे	उषा शर्मा 'प्रिया'	04
जब करना हो करियर का चुनाव	दीपक कुमार द्विवेदी	06
10वीं के बाद अग्निवीर के साथ भी	अलकेश चतुर्वेदी	09
ऑन जॉब कमाने के अवसर	डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'	11
पारम्परिक शिक्षा से परे करियर विकल्प	डॉ. रामेश्वर मिश्र	13
भारत की परमाणु ऊर्जा विजय	डॉ. शुभ्रता मिश्रा	16
आधुनिक शिक्षण व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परम्परा	प्रो. क्षितिज पाटुकले	18
शिक्षा का व्यवसायीकरण	शिव भूषण तिवारी	20
वर्तमान में गुरुकुल से आवासीय विद्यालय	लवकुश तिवारी	23
निपुण बनातीं ये संस्थाएं	डॉ. ताड़केश्वर नाथ मिश्र	25
शिक्षक का सम्मान	कहानी	27
समाचार	–	29

पंजीयन शुल्क

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

10वीं के बाद बच्चों के मन में ये उलझन होती है कि वे अपने करियर को किस दिशा की ओर मोड़ें। उनके सामने करियर के कई विकल्प होते हैं। जिनमें अवसर भी हैं और चुनौतियां भी हैं।

उषा शर्मा 'प्रिया'

विकल्प टटोलते बच्चे

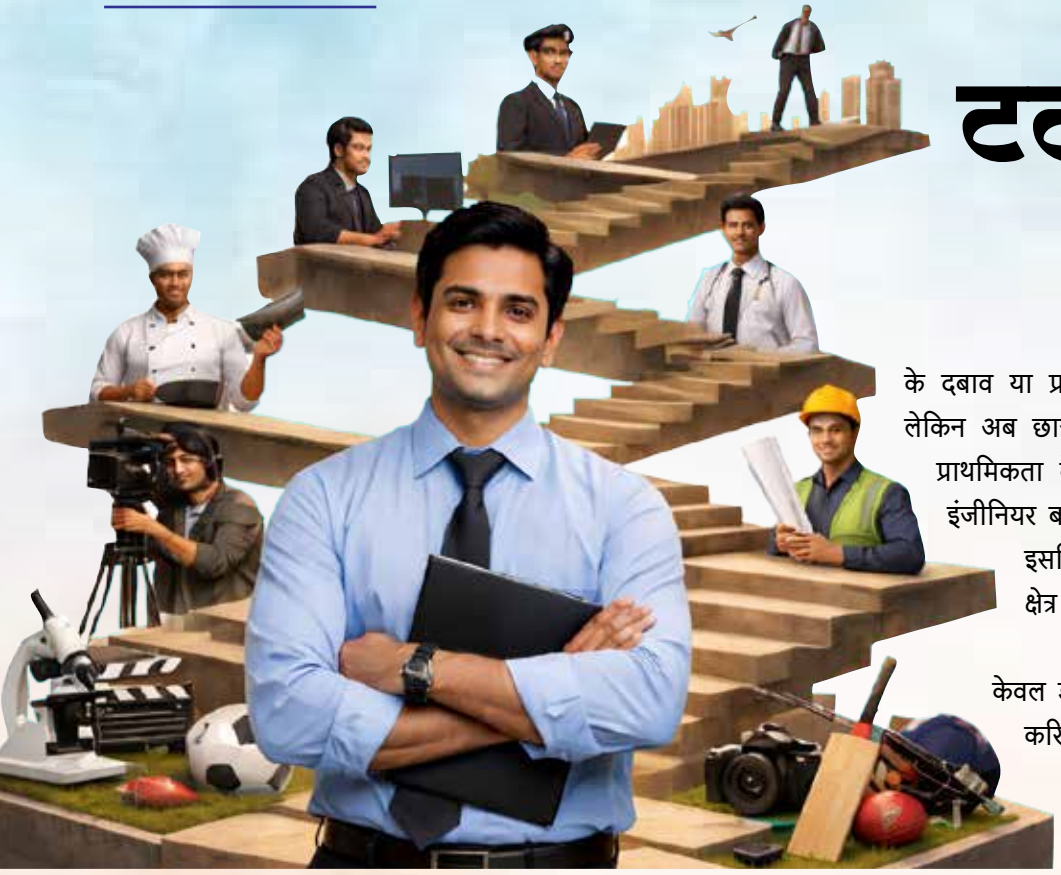

आज के समय में यह स्पष्ट रूप से देखा जा रहा है कि छात्र केवल डॉक्टर और इंजीनियर जैसे करियर विकल्पों तक सीमित नहीं रहना चाहते बल्कि वे अन्य क्षेत्रों की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। इसके पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं।

बदलते हुए समय और नई सम्भावनाएं: आज का युग तकनीक और नवाचार का है। डिजिटल मीडिया, स्टार्टअप, डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजाइनिंग, एनीमेशन, खेल और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में नए अवसर तेजी से बढ़ रहे हैं। ये क्षेत्र छात्रों को अपनी रुचि के अनुसार काम करने का अवसर देते हैं।

रुचि और प्रतिभा को महत्व: पहले करियर का चयन समाज के दबाव या प्रतिष्ठा के आधार पर होता था, लेकिन अब छात्र अपनी रुचि और प्रतिभा को प्राथमिकता दे रहे हैं। हर छात्र डॉक्टर या इंजीनियर बनने के लिए उपयुक्त नहीं होता, इसलिए वे अपने कौशल के अनुसार क्षेत्र चुनते हैं।

रोजगार के नए विकल्प: आज केवल डॉक्टर और इंजीनियर ही सफल करियर नहीं हैं बल्कि बहुत से अन्य विकल्प भी छात्रों के समक्ष होते हैं। जैसे- डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट राइटिंग, यूट्यूब और सोशल मीडिया क्रिएशन, फैशन डिजाइनिंग, होटल मैनेजमेंट, खेल और फिटनेस इन क्षेत्रों में भी अच्छी आय और पहचान मिल रही है।

प्रतिस्पर्धा और सीमित सीटें: डॉक्टर और इंजीनियर बनने के लिए सीटें सीमित होती हैं। हर छात्र इन परीक्षाओं में सफल नहीं हो पाता, इसलिए वे अन्य विकल्पों की खोज करते हैं।

सफलता के नए उदाहरण: आज समाज में कई ऐसे लोग हैं जिन्होंने करियर के अलावा अन्य क्षेत्रों में बड़ी सफलता प्राप्त की है। जैसे-यूट्यूबर्स, उद्यमी, कलाकार और खिलाड़ी। इनसे प्रेरित होकर छात्र भी नए क्षेत्रों की ओर बढ़ रहे हैं।

आर्थिक और समय की दृष्टि से लाभ: डॉक्टर बनने में बहुत

समय और पैसा लगता है, जबकि कुछ अन्य कोर्स कम समय और कम खर्च में पूरे हो जाते हैं और जल्दी रोजगार भी मिल जाता है।

जागरूकता और जानकारी का विस्तार

इंटरनेट और सोशल मीडिया के कारण छात्रों को विभिन्न करियर विकल्पों के बारे में अधिक जानकारी मिल रही है। इससे वे सही निर्णय ले पा रहे हैं। सही जानकारी और मार्गदर्शन के अभाव में छात्र अधिकतर सीमित विकल्पों में ही उलझ जाते हैं। 10वीं के बाद उपलब्ध विभिन्न करियर विकल्प और पाठ्यक्रम निम्न हैं।

पारम्परिक शैक्षणिक विकल्प : आज से कुछ समय पहले छात्र 10वीं के बाद सबसे सामान्य विकल्प 11वीं में निम्न स्ट्रीम्स का चयन करते थे।

विज्ञान: भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान, गणित,

करियरविकल्प: डॉक्टर, इंजीनियर, रिसर्चर, फार्मासिस्ट, आईटी, प्रोफेशनल, बॉयोटेक्नोलॉजी, माइक्रोबॉयोलॉजी, पर्यावरण विज्ञान

वाणिज्य: अकाउंटेंसी, बिजनेस स्टडीज, इकोनॉमिक्स

करियर विकल्प: सीए, सीएस, बैंकिंग, मैनेजमेंट, फाइनेंस

अन्य विकल्प: डिजिटल मार्केटिंग, बिजनेस एनालिस्ट

कला विषय: इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान

करियर विकल्प: पत्रकारिता, सिविल सेवा, शिक्षक, सामाजिक कार्य

अन्य विकल्प: फैशन डिजाइन, ग्राफिक डिजाइन, कंटेंट राइटिंग

व्यावसायिक पाठ्यक्रम : यदि कोई छात्र जल्दी रोजगार प्राप्त करना चाहता है तो व्यावसायिक पाठ्यक्रम एक बेहतरीन विकल्प हैं।

आई. टी. आई कोर्स ट्रेड: इलेक्ट्रीशियन, फिटर, वेल्डर, प्लम्बर

पॉलिटेक्निक डिप्लोमा: इंजीनियरिंग के विभिन्न क्षेत्र (मैकेनिकल, सिविल, इलेक्ट्रिकल) पैरामेडिकल कोर्स, लैब टेक्नीशियन, रेडियोलॉजी, नर्सिंग सहायक ये कोर्स कम समय में कौशल आधारित प्रशिक्षण देकर रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं।

स्किल-आधारित और क्रिएटिव कोर्स: आज के डिजिटल युग में स्किल्स की बहुत मांग है। ग्राफिक डिजाइनिंग, वेब डिजाइनिंग और डेवलपमेंट, डिजिटल मार्केटिंग, वीडियो एडिटिंग और एनीमेशन, फोटोग्राफी, ये कोर्स फ्री स्टार्टअप के अवसर भी देते हैं।

सरकारी और रक्षा क्षेत्र के विकल्प: 10वीं के बाद कुछ छात्र सरकारी सेवाओं की तैयारी भी शुरू कर सकते हैं:

भारतीय सेना, नौसेना, वायुसेना, पुलिस और अर्धसैनिक बल रेलवे और अन्य सरकारी नौकरियां, ये करियर अनुशासन, सम्मान और स्थिरता प्रदान करते हैं।

आज के उभरते हुए करियर विकल्प

नई तकनीकों और बदलती दुनिया के साथ नए करियर भी सामने आए हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), डेटा साइंस, साइबर सिक्योरिटी, गेम डिजाइनिंग, रोबोटिक्स इन क्षेत्रों में भविष्य में बहुत अधिक अवसर हैं।

स्वयं का व्यवसाय: यदि छात्र में नेतृत्व और जोखिम लेने की क्षमता है, तो वह अपना व्यवसाय शुरू कर सकता है जैसे:- ऑनलाइन बिजनेस, ब्लॉगिंग/यूट्यूब चैनल, स्थानीय व्यापार (दुकान, सेवा केंद्र), सही योजना और मेहनत से यह विकल्प बहुत सफल हो सकता है।

सबसे महत्वपूर्ण है अपनी रुचि, क्षमता और लक्ष्य को पहचानना। सही मार्गदर्शन, निरंतर मेहनत और सकारात्मक सोच के साथ कोई भी छात्र अपने लिए एक सफल और संतोषजनक करियर बना सकता है। सफलता उसी को मिलती है, जो अपने रास्ते खुद चुनता है और उस पर दृढ़ता से चलता है।

10वीं के बाद लड़कियों के लिए सबसे अच्छे करियर विकल्पों में आईटीआई, पैरामेडिकल, पॉलिटेक्निक (इंजीनियरिंग), डिजिटल मार्केटिंग और ब्यूटी एंड वेलनेस जैसे कोर्स शामिल हैं। ये कोर्स 1-3 साल में सीधे जॉब (नौकरी) दिलाने में सक्षम हैं, जिससे आप आत्मनिर्भर बन सकती हैं। लड़कियों के लिए 10वीं के बाद बेहतर कोर्सेज की सूची:

स्वास्थ्य एवं नर्सिंग: नर्सिंग केयर असिस्टेंट या ऑपरेशन थिएटर टेक्नीशियन, जो हॉस्पिटल में जल्द जॉब दिलाते हैं।

टेक्निकल: कम्प्यूटर ऑपरेटर, फैशन डिजाइनिंग, डेस्कटॉप पब्लिशिंग, ड्रेस मेकिंग या मैकेनिकल/इलेक्ट्रिकल डिप्लोमा।

रचनात्मक: फैशन डिजाइनिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग या ब्यूटी एंड वेलनेस में डिप्लोमा (3-6 महीने या 1 साल)।

कम्प्यूटर और बिजनेस: डेटा एंट्री ऑपरेटर, डिजिटल मार्केटिंग या फाइनेंशियल अकाउंटिंग

10वीं के बाद सबसे अच्छा विकल्प कैसे चुनें? जल्दी नौकरी के लिए: आईटीआई या पैरामेडिकल डिप्लोमा करें। इंजीनियर बनने के लिए: पॉलिटेक्निक (3 साल) चुनें। रचनात्मक क्षेत्र के लिए: फैशन या फाइन आर्ट्स में डिप्लोमा करें।

10वीं के बाद कम्प्यूटर कोर्स और ब्यूटीशियन कोर्स आजकल लड़कियों के लिए बहुत लोकप्रिय हैं क्योंकि इनमें घर बैठे काम करने के भी अवसर मिलते हैं। ✦✦✦

जब करना हो करियर का चुनाव

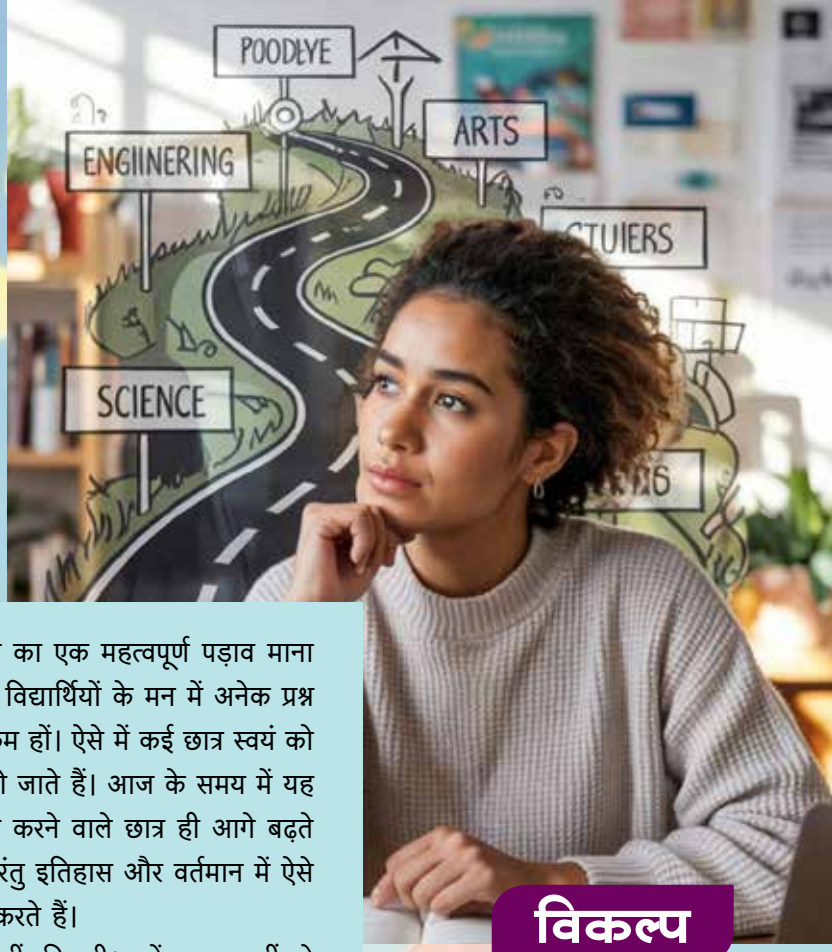

विकल्प

दीपक कुमार द्विवेदी

10वीं कक्षा का परिणाम विद्यार्थियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जाता है। जैसे ही परिणाम घोषित होते हैं, विद्यार्थियों के मन में अनेक प्रश्न उठने लगते हैं, विशेषकर तब जब अंक 80 प्रतिशत से कम हों। ऐसे में कई छात्र स्वयं को औसत समझने लगते हैं और भविष्य को लेकर चिंतित हो जाते हैं। आज के समय में यह धारणा बन गई है कि 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र ही आगे बढ़ते हैं, जबकि कम अंक पाने वाले छात्र पीछे रह जाते हैं, परंतु इतिहास और वर्तमान में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जो इस सोच को गलत सिद्ध करते हैं।

क्रिकेट जगत के महान खिलाड़ी सचिन तेंडुलकर 10वीं की परीक्षा में सफल नहीं हो पाए थे क्योंकि उनका अधिक समय क्रिकेट अभ्यास में बीतता था, परंतु उन्होंने अपने जुनून को पहचाना और उसी दिशा में लगातार मेहनत करते रहें। परिणामस्वरूप वे विश्व क्रिकेट के महानतम खिलाड़ियों में शामिल हुए। इसी प्रकार भारत के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी पढ़ाई में औसत छात्र रहे, उन्हें खेलों में अधिक रुचि थी। उन्होंने रेलवे में टिकट कलेक्टर की नौकरी भी की, पर साथ ही क्रिकेट का अभ्यास जारी रखा। आगे चलकर वे भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान बने। उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि औसत अंक होने के बाद भी व्यक्ति अपनी रुचि के क्षेत्र में बड़ी सफलता प्राप्त कर सकता है।

भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति धीरूभाई अंबानी ने भी बहुत अधिक औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। उन्होंने छोटे स्तर से काम शुरू किया और धीरे-धीरे व्यापार जगत में अपनी पहचान बनाई। आगे चलकर उन्होंने रिलायंस इंडस्ट्रीज की स्थापना की, जो आज भारत की सबसे बड़ी कम्पनियों में शामिल है। इसी प्रकार मुक्केबाज मैरी कॉम साधारण परिवार से थीं। सीमित संसाधनों के बाद भी उन्होंने बॉक्सिंग में रुचि लिया और कठिन परिस्थितियों में भी अभ्यास जारी रखा। आगे चलकर वे 6 बार विश्व चैंपियन बनीं और ओलम्पिक पदक भी जीता। उनकी सफलता यह दर्शाती है कि परिस्थितियां चाहे कैसी भी हों, यदि संकल्प मजबूत हो तो सफलता प्राप्त की जा सकती है।

विश्व स्तर पर भी ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं।

इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि 10वीं में कम अंक आने का अर्थ यह नहीं कि भविष्य सीमित हो गया है। सफलता का मार्ग हर व्यक्ति के लिए अलग होता है। यदि छात्र अपनी रुचि पहचानें, कौशल विकसित करें और निरंतर मेहनत करें तो वे किसी

अभिभावक और समाज भी कई बार अंकों को लेकर अनावश्यक दबाव बना देते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि 10वीं के अंक केवल एक परीक्षा का परिणाम होते हैं, किसी छात्र की क्षमता का अंतिम मापदंड नहीं।

भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए विद्यार्थियों को अंकों से निराश होने के बजाए अपने लक्ष्य पर ध्यान देना चाहिए और भविष्य की दिशा तय करनी चाहिए। यही सोच उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। आज शिक्षा व्यवस्था भी बदल रही है। नई शिक्षा नीति 2020 में कौशल आधारित शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है। सरकार का लक्ष्य है कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान और व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ा जाए। इससे यह स्पष्ट होता है कि आने वाले समय में केवल अंक नहीं बल्कि कौशल और व्यवहारिक ज्ञान अधिक महत्वपूर्ण होंगे। इसलिए 10वीं में कम अंक आने पर निराश होने के बजाए विद्यार्थियों को अपनी रुचि पहचानने और सही दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। 10वीं के बाद विषय चयन विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण निर्णय होता है। कई बार विद्यार्थी दूसरों की देखा-देखी या समाज के दबाव में विज्ञान विषय चुन लेते हैं, जबकि उनकी रुचि किसी अन्य क्षेत्र में होती है। इससे आगे चलकर कठिनाई होती है। यदि किसी विद्यार्थी की रुचि विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में है तो वह विज्ञान विषय चुन सकता है और आगे चलकर इंजीनियरिंग, नर्सिंग, फार्मेसी, कम्प्यूटर या तकनीकी क्षेत्र में अपना करियर बना सकता है। यदि अंक कम हों तो पॉलिटेक्निक, आईटीआई या अन्य तकनीकी कोर्स भी अच्छे विकल्प होते हैं, जिनसे जल्दी रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। यदि किसी विद्यार्थी की रुचि व्यापार या वित्तीय क्षेत्र में है तो वाणिज्य विषय एक अच्छा विकल्प हो सकता है। कॉमर्स के माध्यम से अकाउंटिंग, बैंकिंग, बिजनेस, डिजिटल मार्केटिंग, ई-कॉमर्स जैसे क्षेत्रों में करियर बनाया जा सकता है। आज स्टार्टअप और ऑनलाइन व्यवसाय के बढ़ते अवसरों के कारण कॉमर्स का महत्व तेजी से बढ़ रहा है। वहीं कला विषय भी आज के समय में अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया है। प्रशासनिक सेवाएं, पत्रकारिता, कानून, शिक्षण, मनोविज्ञान, सामाजिक कार्य, पर्यटन और डिजाइनिंग जैसे अनेक क्षेत्र कला विषय से जुड़े हुए हैं। कई सफल अधिकारी और पेशेवर कला पृष्ठभूमि से आते हैं। इसके अलावा 10वीं के बाद कई ऐसे व्यावसायिक कोर्स भी उपलब्ध हैं जिनसे रोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं। आईटीआई, पॉलिटेक्निक, कम्प्यूटर कोर्स, पैरामेडिकल कोर्स, होटल मैनेजमेंट, मोबाइल रिपेयरिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग, डिजिटल मार्केटिंग, फोटोग्राफी जैसे कोर्स कम समय में रोजगार उपलब्ध कराते हैं। कई छात्र इन कोर्सों के माध्यम से स्वरोजगार भी शुरू करते हैं और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनते हैं।

✦✦✦

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483

भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

पितांबरी® ॲग्रो टूरिजम

चलो घूमने दुनिया की सैर करने!

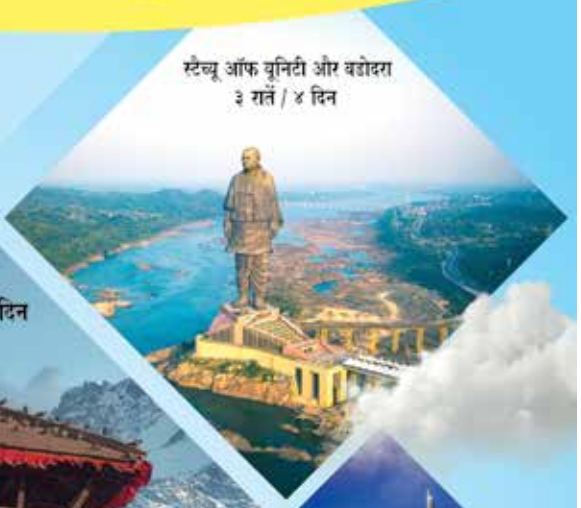

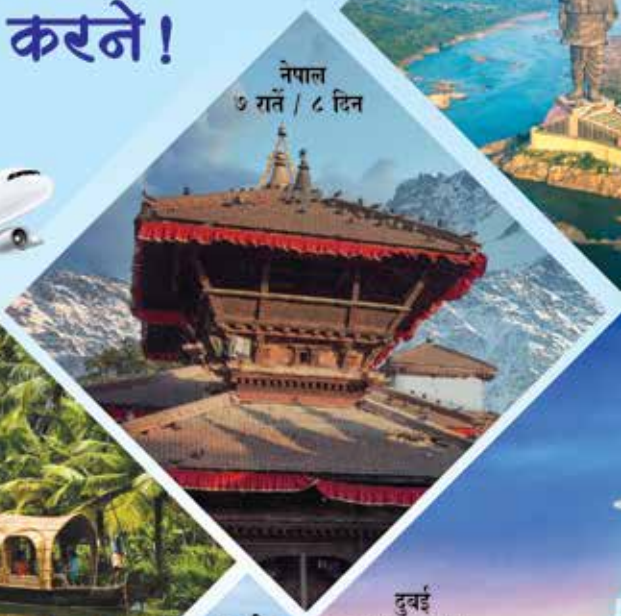

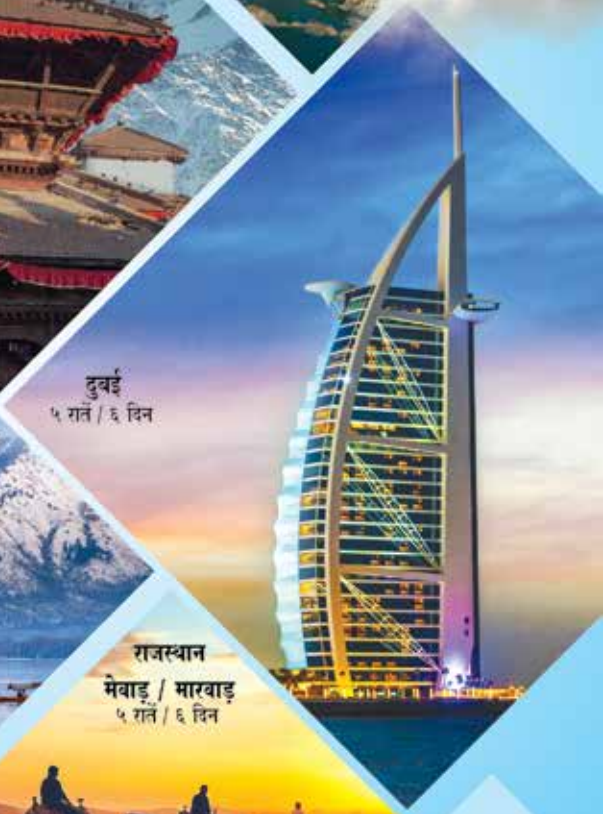

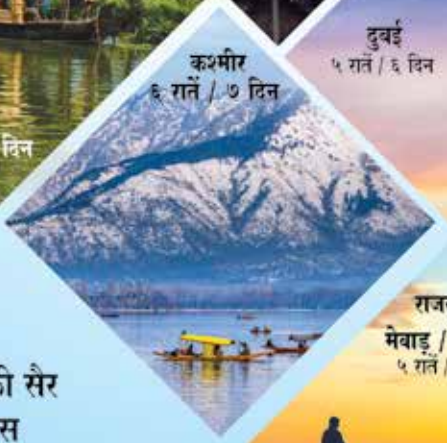

टूर में शामिल :

- एसी बस / गाड़ी में सफर और स्थानीय पर्यटन स्थलों की सैर
- ठहरने के लिए प्रीमियम होटल्स
- स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था
- जानकार गाइड और सभी प्रवेश टिकट

अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए संपर्क :
8828913131, 8657968481, 8530015838,
9702963400, 8657307352

चयन

10वीं के बाद अग्निवीर के साथ भी

10वीं के बाद विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपनी रुचि, क्षमता और लक्ष्य के अनुसार सही विकल्प का चयन करें। यदि सही दिशा में प्रयास किया जाए, तो 10वीं के बाद चुना गया कोई भी मार्ग जीवन में सफलता, आत्मनिर्भरता और गौरव प्रदान कर सकता है।

अलकेश चतुर्वेदी

भारत में 10वीं कक्षा उत्तीर्ण करना केवल एक शैक्षणिक उपलब्धि नहीं बल्कि जीवन के एक निर्णायक मोड़ का संकेत है। यही वह चरण है जहां विद्यार्थी अपने भविष्य की दिशा तय करता है। लम्बे समय तक यह धारणा रही कि 10वीं के बाद केवल 11वीं-12वीं की पढ़ाई ही सफलता का मार्ग है, परंतु आज के कौशल-आधारित युग में अनेक ऐसे विकल्प उपलब्ध हैं जो कम समय में रोजगार, आत्मनिर्भरता और सम्मानजनक जीवन प्रदान कर सकते हैं। विशेष रूप से मर्चेंट नेवी, पुलिस भर्ती और अग्निवीर जैसे क्षेत्रों ने युवाओं के लिए करियर और नौकरी दोनों के द्वार खोल दिए हैं। इन विकल्पों के साथ-साथ आधुनिक तकनीकी और डिजिटल क्षेत्रों के अवसर भी समान रूप से महत्वपूर्ण हो गए हैं।

सबसे पहले यदि हम भारतीय नौसेना की बात करें तो यह केवल एक नौकरी नहीं बल्कि अनुशासन, साहस और राष्ट्र सेवा का प्रतीक है। 10वीं के बाद छात्र नाविक के रूप में आवेदन कर सकते हैं। इस क्षेत्र में चयनित युवाओं को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण, नियमित वेतन, चिकित्सा सुविधाएं और सम्मानजनक जीवन मिलता है। नौसेना में कार्य करते हुए युवा आधुनिक तकनीक, संचार प्रणाली और रक्षा कौशल सीखते हैं, जो उन्हें भविष्य में भी सक्षम बनाता है। यह एक ऐसा करियर है जो व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाता है।

इसी प्रकार रेडियो मर्चेंट नेवी एक अत्यंत आकर्षक और वैश्विक करियर विकल्प है। इस क्षेत्र में कार्य करने वाले युवा समुद्री जहाजों पर संचार प्रणाली का संचालन करते हैं। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें वेतन अत्यधिक होता है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम करने का अवसर मिलता है। 10वीं के बाद छात्र सम्बंधित

डिप्लोमा या प्रशिक्षण लेकर इस क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं। यह करियर उन युवाओं के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है जो साहसिक जीवन और वैश्विक जीवन चाहते हैं।

पुलिस भर्ती भी युवाओं के लिए एक स्थिर और सम्मानजनक करियर विकल्प है। विभिन्न राज्यों में 10वीं के बाद पुलिस कांस्टेबल के पदों पर भर्ती होती है। इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए शारीरिक दक्षता, मानसिक दृढ़ता और अनुशासन आवश्यक है। पुलिस सेवा समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखने का महत्वपूर्ण माध्यम है। इसमें न केवल स्थिर नौकरी मिलती है बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और सेवा का अवसर भी प्राप्त होता है।

हाल के वर्षों में प्रारम्भ की गई अग्निवीर योजना ने युवाओं के लिए एक नया और लचीला मार्ग प्रस्तुत किया है। इस योजना के अंतर्गत युवा 4 वर्षों के लिए सेना, नौसेना या वायुसेना में सेवा कर सकते हैं। इस दौरान उन्हें सैन्य प्रशिक्षण, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता का विकास करने का अवसर मिलता है। सेवा के पश्चात उन्हें एक आर्थिक पैकेज प्रदान किया जाता है और विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होते हैं। यह योजना उन युवाओं के लिए अत्यंत उपयोगी है जो कम समय में राष्ट्र सेवा का अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं और भविष्य में अन्य क्षेत्रों में आगे बढ़ना चाहते हैं।

इन प्रमुख क्षेत्रों के साथ-साथ 10वीं के बाद अनेक शॉर्ट टर्म कोर्सेस भी उपलब्ध हैं, जो करियर के लिए वरदान सिद्ध हो सकते हैं। उदाहरण के लिए- आईटीआई (इलेक्ट्रिशियन, फिटर, वेल्डर), कम्प्यूटर कोर्स, मोबाइल रिपेयरिंग, डाटा एंट्री, ग्राफिक डिजाइनिंग, ड्रोन ऑपरेशन आदि। ये कोर्स 3 महीने से 1 वर्ष के भीतर पूरे किए जा सकते हैं और तुरंत रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। सीखते हुए कमाने की अवधारणा इन कोर्सेस की सबसे बड़ी विशेषता है। आधुनिक युग में कुछ नए और उभरते हुए क्षेत्र भी हैं जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। प्रोडक्ट डिजाइनिंग ऐसा ही एक क्षेत्र है जहां विद्यार्थी अपनी रचनात्मकता और तकनीकी कौशल के माध्यम से नए उत्पाद विकसित कर सकते हैं। यह क्षेत्र मेक इन इंडिया और स्टार्टअप संस्कृति से जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार यूआई/यूएक्स डिजाइनिंग डिजिटल दुनिया का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है, जहां मोबाइल ऐप और वेबसाइट को उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाया जाता है।

3-डी प्रिंटिंग और प्रोटोटाइपिंग ने निर्माण क्षेत्र में नई क्रांति ला दी है, जबकि ड्रोन तकनीक कृषि, सर्वेक्षण और सुरक्षा क्षेत्रों में तेजी से विकसित हो रही है। ये सभी क्षेत्र भविष्य के करियर विकल्प हैं, जहां भारतीय युवाओं के लिए अपार सम्भावनाएं हैं। इसके अतिरिक्त कंटेंट क्रिएशन और फ्रीलांसिंग भी आज के समय में महत्वपूर्ण करियर बन चुके हैं। युवा यूट्यूब, ब्लॉगिंग और सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित कर सकते हैं और आय अर्जित कर सकते हैं। फ्रीलांसिंग के माध्यम से भारत में बैठकर अमेरिका और यूरोप के लिए कार्य करना सम्भव हो गया है।

एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि आज का करियर केवल एक दिशा में सीमित नहीं है। एक युवा एक साथ कई क्षेत्रों में कार्य कर सकता है- जैसे कोई व्यक्ति दिन में नौकरी करते हुए शाम को फ्रीलांसिंग या कंटेंट क्रिएशन भी कर सकता है। इसे पोर्टफोलियो करियर कहा जाता है, जो भविष्य की अर्थव्यवस्था का आधार बन रहा है।

10वीं के बाद करियर के विकल्प अब अत्यंत व्यापक और विविध हो चुके हैं। नेवी, रेडियो मर्चेंट, पुलिस भर्ती और अग्निवीर जैसे क्षेत्र युवाओं को अनुशासन, सम्मान और स्थिरता प्रदान करते हैं, वहीं प्रोडक्ट डिजाइनिंग, डिजिटल स्किल्स और फ्रीलांसिंग जैसे क्षेत्र नवाचार और स्वतंत्रता के अवसर प्रदान करते हैं।

✦✦✦

ऑन जॉब कमाने के अवसर

भारत सदा से शिक्षा का पक्षधर रहा है, हमारे देश में शैक्षणिक व्यवस्था केवल ग्रंथ, पुस्तक या किताबी ज्ञान से नहीं बल्कि सदैव कौशल आधारित रही है। प्राचीन काल में गुरुकुल में केवल शास्त्र ही नहीं पढ़ाए जाते थे बल्कि वहां युद्ध कौशल, घर कार्य, व्यवहारिक शिक्षा इत्यादि भी प्रदान की जाती थी, जिसके कारण बच्चे का सर्वांगीण विकास होता था। वर्तमान समय में जिस तरह माता-पिता का बच्चों पर दबाव केवल किताबी अध्ययन और उसके आधार पर हुई परीक्षा में सर्वोच्च अंकों पर सिमट रहा है, यह नस्लों को खराब करने का एक प्रक्रम भी है। इस तरह बच्चों का सम्पूर्ण विकास नहीं हो पाता। ऐसे में कक्षा 10वीं के बाद लाखों बच्चें किताबी शिक्षा नहीं लेना चाहते, उन बच्चों के लिए कौशल आधारित शिक्षा पद्धति बहुत अनिवार्य है।

ऐसे छात्र-छात्राओं को जो 10वीं कक्षा पास करने के बाद आगे की नियमित पढ़ाई (जैसे 11वीं, 12वीं व कॉलेज) में रुचि नहीं रखते, उन्हें निराश होने की कतई आवश्यकता नहीं है। वर्तमान में ऐसे कई कोर्स, कार्यशालाएं, विधाएं व रोजगारोन्मुखी कार्य बाजार में उपलब्ध हैं, जिन्हें सीखकर वे अपना करियर बना सकते हैं, उत्कृष्ट कमाई कर परिवार का पालन-पोषण कर सकते हैं। इसमें विद्यार्थियों को बिना किसी पढ़ाई के जॉब करते-करते सीखने के अवसरों में भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता से व्यक्तित्व विकास भी होता है और व्यवहारिक भी है।

10वीं की पढ़ाई के बाद विद्यार्थी नौकरी करके अपने करियर में ऊंची उड़ान भर सकते हैं। साथ ही, किसी तरह की पढ़ाई की बाध्यता भी नहीं होती और पॉकेट फ्रेंडली बजट में काम भी सीखकर अपना व्यवसाय भी शुरू किया जा सकता है, जिसके लिए सरकार भी लोन उपलब्ध करवाती है।

मार्गदर्शन

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

ग्राफिक डिजाइनिंग एवं एनिमेशन

आजकल हर व्यापार के प्रमोशन के लिए, सोशल मीडिया पोस्टिंग के लिए बढ़िया ग्राफिक्स वाले पोस्टर, वीडियो की आवश्यकता होती है, उसके लिए अच्छे ग्राफिक डिजाइनर का होना एकदम आवश्यक है। ऐसे में 10वीं पास करने के बाद बच्चे को किसी अच्छे इंस्टीट्यूट से ग्राफिक डिजाइनिंग, वीडियो एडिटिंग का कोर्स करके अपना काम शुरू करना चाहिए। इस विधा से कम से कम 2000-5000 रु. प्रतिदिन कमाए जा सकते हैं और कोर्स सीखने में भी बहुत इंवेस्टमेंट नहीं लगता।

गैरेज मैकेनिक का काम

किसी भी मोटर साइकिल, कार इत्यादि रिपेयरिंग के लिए सीधे गैरेज पर काम मिल जाता है, वहीं मैकेनिक काम सिखाते भी है और पैसा भी नियमित मिलता है। इससे कमाई भी होती रहती है और काम भी सीखने का अवसर मिलता रहता है।

आईटीआई कोर्स

भारत में आईटीआई सबसे लोकप्रिय तकनीकी कोर्स में से एक है। इसमें 6 महीने से लगाकर 2 साल तक के कई छोटे-बड़े तकनीकी कोर्स होते हैं, जैसे कम्प्यूटर ऑपरेटर, इलेक्ट्रीशियन, फिटर, वेल्डर, प्लम्बर, मोबाइल रिपेयरिंग, मोटर मैकेनिक

इत्यादि कई सारे विकल्प उपलब्ध होते हैं। इनमें से कोई भी कोर्स करके अपना व्यवसाय शुरू किया जा सकता है। बहुत कम पूंजी में शुरू होने वाले इस व्यापार में सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में नौकरी के भी अवसर मिलते हैं। सरकारों की ओर से यह प्रशिक्षण निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं।

क्रिएटिव कोर्सेज

रचनात्मक से जुड़े कोर्सेज और काम का प्रभाव हमेशा रहा है, इसके लिए किसी मार्कशीट की नहीं बल्कि रचनात्मक दिमाग की आवश्यकता होती है। जैसे फोटोग्राफी, इंटीरियर डिजाइनिंग, फैशन डिजाइनिंग, बुटीक, ऑफिस डिजाइनिंग इत्यादि फील्ड क्रिएटिविटी की मांग करती है और इसके बदले बहुत पैसा देती है। आजकल छात्र-छात्राओं ने इस ओर भी अपने करियर को मोड़ लिया है।

कम्प्यूटर आधारित शिक्षण व कमाई

वर्तमान युग डिजिटल यानी कम्प्यूटर का है, ऐसे में यदि विद्यार्थियों को कम्प्यूटर कार्यों में दक्ष बना दिया जाए तो वे एक अच्छी नौकरी अथवा व्यवसाय कर सकते हैं और लाखों रुपए मासिक कमा सकते हैं। जैसे वेब डिजाइनिंग, डीटीपी कोर्स, टेली व अकॉउंटिंग का कोर्स, इंटरनेट मार्केटिंग, गेम डेवलपमेंट, मोबाइल एप्प डेवलपमेंट आदि सीखकर अच्छी नौकरी और व्यवसाय शुरू किया जा सकता है।

ब्यूटीपार्लर कोर्स

कम लागत में सीखकर अच्छा व्यापार अथवा प्रतिष्ठित ब्यूटी सलून में बेहतरीन नौकरी का अवसर रखने वाले ब्यूटीपार्लर कोर्स में अपार सम्भावनाएं हैं और आज के समय की मांग भी है। इसमें मेकअप, ब्यूटीशियन कोर्स, पेडी क्योर, मैनीक्योर, हेयर स्टाइलिंग, नेल आर्ट, पियरसिंग, टेटू बनाना इत्यादि कोर्स सीखकर अच्छा करियर बनाया जा सकता है। सबसे बड़ी बात यह व्यवसाय कम लागत में शुरू किया जा सकता है और कमाई के अच्छे और नियमित अवसर प्रदान करता है।

होटल मैनेजमेंट

आजकल हर शहर में अच्छी होटलों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है और लगभग हर होटल अपना ब्रांड स्थापित करने के लिए अपने यहां प्रशिक्षित कर्मचारी रखता है, ऐसे में होटल मैनेजमेंट, कुकिंग इत्यादि में करियर की सम्भावनाएं भी बढ़ रही हैं, किंतु प्रशिक्षित कर्मचारी की कमी अभी भी बनी हुई है। इस कोर्स को करने के बाद नौकरी की त्वरित सम्भावनाएं रहती हैं।

✦✦✦

पारम्परिक शिक्षा से परे करियर विकल्प

अवसर

डॉ. रामेश्वर मिश्र

10वीं के बाद करियर के विकल्प अब पहले की तुलना में कहीं अधिक व्यापक और विविध हो गए हैं। यदि छात्र पारम्परिक सीमाओं से बाहर निकलकर अपनी रुचि के अनुसार सही मार्ग का चयन करते हैं तो वे देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

आज के प्रतिस्पर्धी, तकनीकी और तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में विद्यार्थियों के लिए करियर चुनना पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में लम्बे समय तक 10वीं कक्षा के बाद छात्रों के लिए मुख्यतः कला, वाणिज्य और विज्ञान जैसी पारम्परिक धाराएं ही करियर के प्रमुख मार्ग मानी जाती रही हैं। अभिभावक और छात्र दोनों ही इन धाराओं को सुरक्षित और प्रतिष्ठित विकल्प मानते थे, परंतु बदलते वैश्विक परिदृश्य, तीव्र तकनीकी विकास और रोजगार के बदलते स्वरूप ने इस धारणा को बहुत सीमा तक परिवर्तित कर दिया है। आज के समय में 10वीं के बाद छात्रों के सामने ऐसे अनेक विकल्प उपलब्ध हैं, जो न केवल उन्हें शीघ्र रोजगार दिला सकते हैं बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और कौशल-सम्पन्न भी बना सकते हैं।

वर्तमान युग को कौशल आधारित अर्थव्यवस्था का युग कहा जाता है, जहां केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं बल्कि व्यावहारिक दक्षता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी दिशा में राष्ट्रीय कौशल विकास निगम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह संस्था विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकास कार्यक्रम संचालित करती है, जिससे युवा वर्ग को उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षित किया जा सके। इसके साथ ही प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत युवाओं को निःशुल्क प्रशिक्षण और प्रमाणपत्र प्रदान किए जाते हैं, जिससे वे रोजगार के लिए तैयार हो सकें। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान भी उन छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प है, जो पारम्परिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त सेक्टर कौशल परिषदें विभिन्न उद्योगों के अनुरूप विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करते हैं।

व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) का विशेष स्थान है। यहां छात्र 10वीं के बाद विभिन्न ट्रेड्स जैसे इलेक्ट्रिशियन, फिटर, वेल्डर, मैकेनिक, कम्प्यूटर ऑपरेटर आदि में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। इन कोर्सों की अवधि सामान्यतः

1 से 2 वर्ष होती है और इनमें व्यावहारिक प्रशिक्षण पर विशेष जोर दिया जाता है। आईटीआई के अतिरिक्त राष्ट्रीय व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद और राज्य व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद प्रशिक्षण की गुणवत्ता और प्रमाणन सुनिश्चित करते हैं। तकनीकी विशेषज्ञता के लिए केंद्रीय प्लास्टिक इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान जैसे संस्थान भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जहां प्लास्टिक इंजीनियरिंग और निर्माण से सम्बंधित कोर्स संचालित होते हैं।

तकनीकी शिक्षा में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए पॉलिटेक्निक डिप्लोमा एक सशक्त और व्यावहारिक विकल्प है। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थानों में सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल और कम्प्यूटर विज्ञान जैसे विषयों में डिप्लोमा कोर्स उपलब्ध हैं। इसके अलावा दिल्ली कौशल एवं उद्यमिता विश्वविद्यालय तथा सरकारी पॉलिटेक्निक मुम्बई जैसे संस्थान भी उच्च गुणवत्ता की तकनीकी शिक्षा प्रदान करते हैं। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से छात्र उद्योगों में कार्य करने के लिए तैयार होते हैं और आगे चलकर उच्च शिक्षा के अवसर भी प्राप्त कर सकते हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं का क्षेत्र आज तेजी से विस्तार कर रहा है, जिसके कारण पैरामेडिकल और हेल्थकेयर से जुड़े कोर्सों की मांग बढ़ती जा रही है। अखिल भारतीय आयुर्वेद विज्ञान संस्थान जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ-साथ इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी, अपोलो हॉस्पिटल्स एजुकेशनल एंड रिसर्च फाउंडेशन तथा फोर्टिस हेल्थकेयर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट भी विभिन्न स्वास्थ्य सम्बंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करते हैं। इन कोर्सों के माध्यम से छात्र लैब तकनीशियन, रेडियोलॉजी सहायक, नर्सिंग सहायक आदि के रूप में कार्य कर सकते हैं, जिनकी आज के समय में अत्यधिक मांग है।

सेवा क्षेत्र में होटल प्रबंधन और पर्यटन उद्योग भी तेजी से उभरता हुआ क्षेत्र है। होटल प्रबंधन संस्थान के साथ-साथ ओबेरॉय सेंटर ऑफ लर्निंग एंड डेवलपमेंट तथा वेलकम ग्रुप ग्रेजुएट स्कूल ऑफ होटल एडमिनिस्ट्रेशन जैसे संस्थान इस क्षेत्र में उच्चस्तरीय प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। इन संस्थानों में छात्रों को फूड प्रोडक्शन, हाउसकीपिंग, फ्रंट ऑफिस संचालन और अतिथि सत्कार से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी जाती है, जिससे वे देश-विदेश में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

रचनात्मक क्षेत्रों में भी आज करियर की अपार सम्भावनाएं उपस्थित हैं। फैशन और डिजाइन के क्षेत्र में राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान के अतिरिक्त राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान तथा पर्ल अकादमी जैसे संस्थान छात्रों को विभिन्न डिजाइनिंग पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित करते हैं। ये संस्थान छात्रों की रचनात्मकता को विकसित करते हुए उन्हें फैशन, मीडिया और विज्ञापन उद्योग के लिए तैयार करते हैं।

डिजिटल क्रांति के इस दौर में एनिमेशन और मल्टीमीडिया का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। एरेना एनिमेशन और एमएएसी के साथ-साथ जी इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव आर्ट और फ्रेमबॉक्स एनीमेशन और विजुअल इफेक्ट्स जैसे संस्थान इस क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। इन कोर्सों के माध्यम से छात्र एनिमेशन, ग्राफिक डिजाइन, वीडियो एडिटिंग और विजुअल इफेक्ट्स जैसे कौशल सीखते हैं, जो आज के डिजिटल उद्योग में अत्यंत उपयोगी हैं।

फाइन आर्ट्स और फोटोग्राफी के क्षेत्र में भी छात्रों के लिए अनेक अवसर उपलब्ध हैं। सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फोटोग्राफी के अलावा कॉलेज ऑफ आर्ट दिल्ली तथा लाइट एंड लाइफ एकेडमी जैसे संस्थान छात्रों को उनकी रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने का अवसर प्रदान करते हैं।

संगीत, नृत्य और अभिनय जैसी प्रदर्शनकारी कलाओं में भी करियर बनाया जा सकता है। भातखंडे संगीत संस्थान के अतिरिक्त इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय और के एम संगीत कंजर्वेटरी जैसे संस्थान उच्च गुणवत्ता का प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। आज के डिजिटल युग में इन क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए मंचों की कोई कमी नहीं है क्योंकि सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स ने प्रतिभा को पहचान दिलाने के नए अवसर प्रदान किए हैं। ✦✦✦

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

सोने तारण कर्ज

जलद कर्ज

कमी प्रक्रिया शुल्क

व्याजदर

९.५०%* वार्षिक

* अटी व शर्ती लागू

TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.in KJSBank

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

भारत की परमाणु ऊर्जा विजय

भारत की परमाणु ऊर्जा गाथा में 6 अप्रैल 2026 का दिन एक ऐतिहासिक कीर्तिमान बन गया है। जी हां, इस दिन 500 मेगावाट विद्युत क्षमता वाला प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (पीएफबीआर) पहली बार क्रिटिकैलिटी तक पहुंचा।

भारत को परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में ऐतिहासिक सफलता प्राप्त हुई है। तमिलनाडु के कल्पक्कम में इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केंद्र का 500 मेगावाट विद्युत क्षमता वाला प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (पीएफबीआर) पहली बार क्रिटिकैलिटी तक पहुंचा। इसका अर्थ है कि रिएक्टर के यूरेनियम-238 की ब्लैंकेट से घिरे कोर में नियंत्रित और स्वयं-संचालित नाभिकीय विखंडन श्रृंखला अभिक्रिया शुरू हो गई। क्रिटिकैलिटी का अर्थ है कि रिएक्टर के कोर में नियंत्रित और स्वयं-संचालित नाभिकीय विखंडन श्रृंखला अभिक्रिया शुरू हो गई, अर्थात् बिना किसी बाहरी न्यूट्रॉन समर्थन के यह प्रक्रिया अपने आप चलने लगी।

आइए, इसे सरल भाषा में समझें तो सूरज को देखिए, वह अरबों वर्षों से बिना किसी बाहरी ईंधन के जल रहा है। उसी तरह यह रिएक्टर भी एक प्रारम्भिक तत्व से शुरू होता है और फिर बिना किसी बाहरी ईंधन के लगातार ऊर्जा उत्पन्न करता रहता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह हमारी धरती पर हर देश में अपने-अपने सूरज के होने जैसा है। यह एक ऐसी श्रृंखला है जो एक बार शुरू होने के बाद अपने आप चलती रहती है और निरंतर ऊर्जा देती है। भारत ने कल्पक्कम परमाणु संयंत्र में ऐसी ही अद्भुत सफलता प्राप्त की है।

अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) ने भारत की इस महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि यह वर्षों के विकास के बाद मिली विजय है। यह उपलब्धि इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि परमाणु रिएक्टरों के लिए आवश्यक ईंधन यूरेनियम भारत के पास बहुत कम है। यहां दुनिया के सबसे बड़े थोरियम भंडारों में से कुछ हैं, जो ओडिशा, केरल और आंध्र प्रदेश के रेतीले तटों पर पाए जाते हैं। कल्पक्कम का रिएक्टर वास्तव में भारत की ऊर्जा रणनीति का अद्भुत समाधान है। फास्ट ब्रीडर रिएक्टर भारत के तीन-चरणीय परमाणु कार्यक्रम का केंद्र है, जिसकी परिकल्पना डॉ. होमी भाभा ने 1950 के दशक में की थी। भारत का तीन-चरणीय परमाणु कार्यक्रम ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दूरदर्शी योजना है। पहले चरण में दाबित भारी जल रिएक्टरों से प्राकृतिक यूरेनियम द्वारा बिजली उत्पादन और प्लूटोनियम का निर्माण है। दूसरा चरण फास्ट ब्रीडर रिएक्टर है, जो प्लूटोनियम को ईंधन बनाकर जितना उपभोग करता है उससे अधिक ऊर्जा स्रोत उत्पन्न करता है। कल्पक्कम का पीएफबीआर इसी चरण का प्रतीक है। तीसरा चरण थोरियम आधारित रिएक्टर है, जहां थोरियम-232 को यूरेनियम-233 में बदलकर भारत के विशाल थोरियम भंडार को ऊर्जा स्रोत बनाया जाएगा। फास्ट ब्रीडर रिएक्टर इस यात्रा की निर्णायक कड़ी हैं क्योंकि वे अतिरिक्त ईंधन उत्पन्न कर भारत को थोरियम आधारित तीसरे चरण की ओर ले जाने वाला सेतु बनाते हैं।

भारत की परमाणु ऊर्जा यात्रा की शुरुआत 1956 में अप्सरा शोध रिएक्टर से हुई, जो एशिया का पहला शोध रिएक्टर था और जिसने भारत को नाभिकीय विज्ञान में प्रवेश दिलाया। इसके बाद ध्रुव जैसे रिएक्टरों ने रेडियोआइसोटोप उत्पादन और

न्यूट्रॉन बीम अनुसंधान को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। 1962 में तारापुर परमाणु ऊर्जा स्टेशन देश का पहला वाणिज्यिक संयंत्र बना। 1970 के दशक में अंतरराष्ट्रीय सहयोग बंद होने पर भारत ने स्वदेशी तकनीक पर विश्वास किया और दाबित भारी जल रिएक्टर (पीएचडब्ल्यूआर) प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता प्राप्त की। प्राकृतिक यूरेनियम आधारित इन रिएक्टरों ने भारत को आत्मनिर्भर बनाया। काकरापार-3 और 4 (700 मेगावाट) ने 2020-21 में सफल संचालन शुरू किया, जबकि तारापुर-3 और 4 (540 मेगावाट) समय से पहले और कम लागत में बने। भारत ने केवल रिएक्टर निर्माण ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण परमाणु ईंधन चक्र जैसे खनन, ईंधन निर्माण, भारी जल उत्पादन और प्रयुक्त ईंधन पुनर्संसाधन में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त की। भारी जल उत्पादन में कमी से जूझने वाला भारत आज अधिशेष उत्पादक है। प्रयुक्त ईंधन का पुनर्संसाधन भारत की दूसरी चरण की रणनीति के लिए अनिवार्य है और इसमें भी भारत ने अपनी क्षमता सिद्ध की है। अप्सरा से लेकर कल्पक्कम के फास्ट ब्रीडर रिएक्टर तक भारत की परमाणु यात्रा वैज्ञानिक दृढ़ता और आत्मनिर्भरता की गाथा है।

परमाणु ऊर्जा का उपयोग केवल विद्युत उत्पादन तक सीमित नहीं है। भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र ने कृषि में उच्च उत्पादन और रोग-प्रतिरोधी फसल किस्में विकसित की हैं, जैसे ट्रॉम्बे सरसों और मूंगफली। स्वास्थ्य क्षेत्र में कैंसर के निदान और उपचार के लिए रेडियोआइसोटोप का व्यापक उत्पादन हुआ है। उद्योगों में खाद्य संरक्षण और चिकित्सा उत्पादों के लिए विकिरण प्रसंस्करण तकनीक का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार परमाणु ऊर्जा ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज भारत का लक्ष्य है कि 2031-32 तक परमाणु ऊर्जा क्षमता को लगभग तीन गुना बढ़ाकर 22.38 गीगावाट तक पहुंचाया जाए और 2047 तक 100 गीगावाट क्षमता प्राप्त की जाए। यह लक्ष्य 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने की राष्ट्रीय प्रतिबद्धता से जुड़ा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत ने शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए 18 देशों के साथ नागरिक परमाणु सहयोग समझौते किए हैं। शांति अधिनियम, 2025 ने परमाणु विधिक ढांचे को आधुनिक बनाया है और सीमित निजी भागीदारी का मार्ग प्रशस्त किया है। परमाणु ऊर्जा भारत की बढ़ती ऊर्जा मांगों को पूरा करने के लिए एक स्थाई और विश्वसनीय विकल्प है। भारत ने कल्पक्कम में फास्ट ब्रीडर रिएक्टर के साथ वह क्षमता प्राप्त कर ली है जिसे अमेरिका, फ्रांस और जापान लम्बे प्रयासों के बाद भी सफल नहीं हो पाए हैं। ✦✦✦

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क
₹ 500

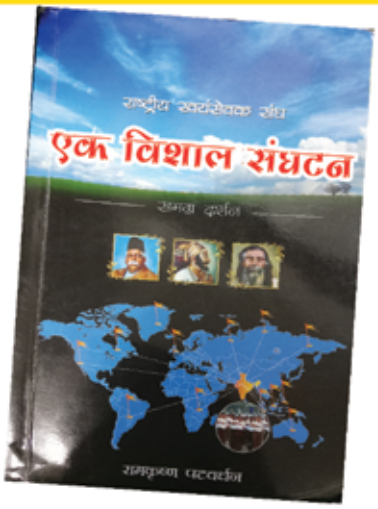

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra Branch : Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 IFSC : MAHB0000318

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

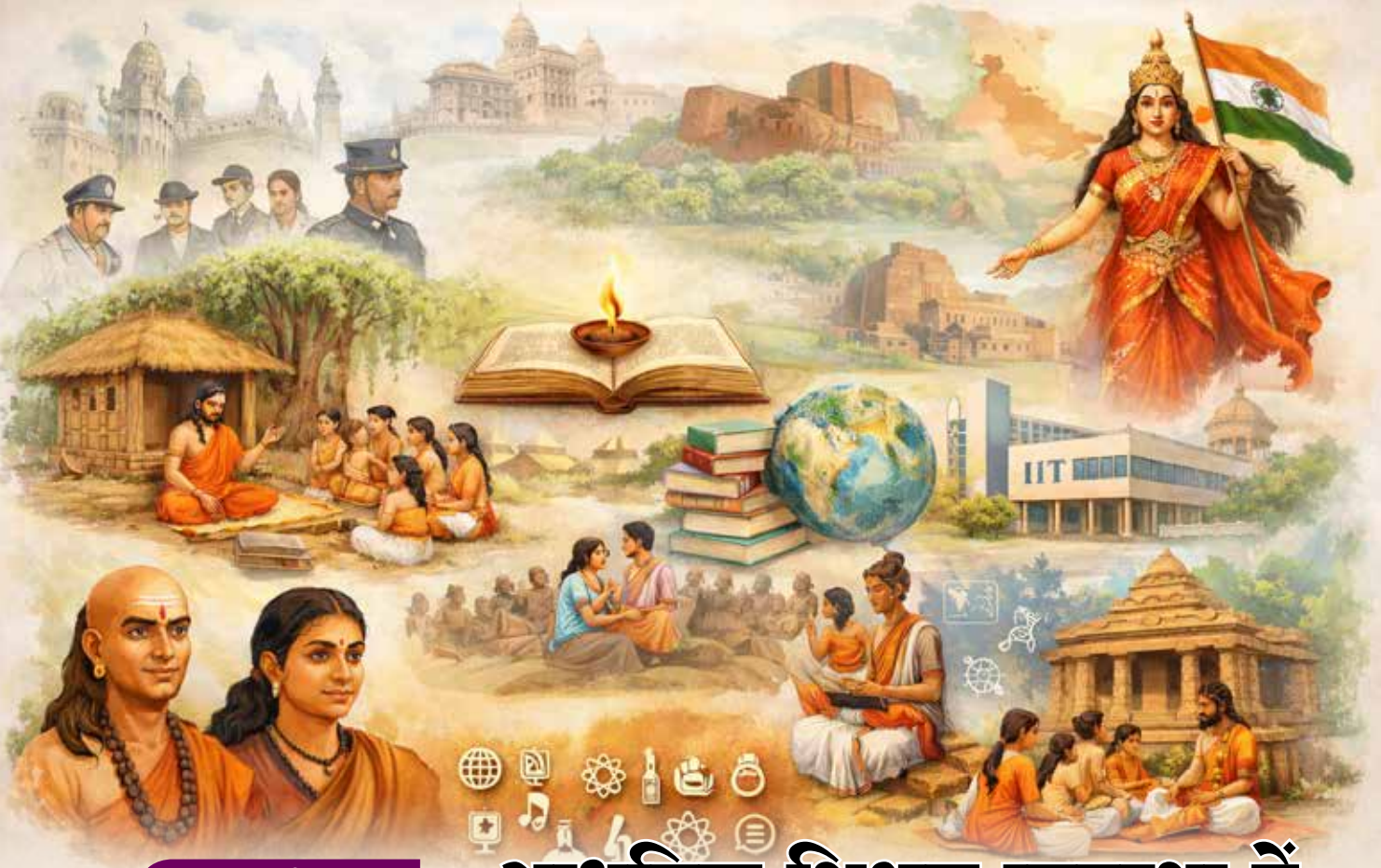

समावेश

आधुनिक शिक्षण व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परम्परा

प्रो. क्षितिज पाटुकले

राष्ट्रीय शैक्षिक नीति में भारतीय ज्ञान परम्पराओं के समावेश से हमने एक कदम आगे रखा है। अब उससे आगे जाकर भारतीय ज्ञान परम्परा प्रशिक्षण की स्वतंत्र व्यवस्था खड़ी करने का मार्ग अपनाना होगा। उससे आधुनिक शिक्षा व्यवस्था और भारतीय ज्ञान परम्पराओं का समन्वय होगा।

नई राष्ट्रीय शैक्षिक नीति एन ई पी 2020 के कारण लगभग 35 वर्षों के बाद देश में शैक्षिक व्यवस्थाओं में आमूलचूल परिवर्तन हो रहे हैं। विशेष रूप से प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्पराओं को राष्ट्रीय शैक्षिक नीति में शामिल किए जाने से हजारों वर्षों से भारतीय भूमि की ज्ञान, शिक्षा और संस्कृति परम्पराओं का अध्ययन करने के लिए एक बहुत बड़ा अवसर उपलब्ध हो रहा है। भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति अत्यंत विशिष्ट थी। धर्मपालजी के शोध ग्रंथ के अनुसार भारत में मैकाले से पूर्व के काल में 3 लाख से अधिक गुरुकुल अस्तित्व में थे। इसका अर्थ है कि उस समय के अखंड भारत में लगभग प्रत्येक 8 से 10 गांवों में एक गुरुकुल अस्तित्व में था। उनमें सभी वर्णों और जातियों के बच्चे शिक्षा ग्रहण करते थे। बालिकाओं और स्त्रियों के लिए भी स्वतंत्र गुरुकुल कार्यरत थे। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप कुटुंब शिक्षा, गुरुकुल शिक्षा, आचार्य शिक्षा, विशेष शिक्षा, समाज शिक्षा, संस्कार शिक्षा, अध्यात्म शिक्षा, मंदिर शिक्षा, लोक शिक्षा जैसा था। भारतीय समाज मूलतः ज्ञानाधिष्ठित समाज के रूप में ही जाना जाता था। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी रुचि और क्षमता के अनुसार ज्ञान और कौशल प्राप्त करने की सुविधाएं उपलब्ध

थीं। 14 विद्याओं और 64 कलाओं की शिक्षा सभी प्रकार की ज्ञान की तृष्णा को शांत करने के लिए और निःश्रेयस अभ्युदय जैसे जीवन लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए सभी को उपलब्ध थी। इसी से सम्पूर्ण विश्व की सबसे उन्नत और समृद्ध सभ्यता के रूप में भारतवर्ष की पहचान थी। विभिन्न देशों से विद्यार्थी, शिक्षक, व्यापारी भारत की ओर आकर्षित होते थे। यहां रहकर ज्ञान ग्रहण करते थे। भारतीय समृद्धि की आधारशिला यहां की शिक्षा व्यवस्था थी। यही बात पहचानकर अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को नष्ट करने का निश्चय किया और उसमें वे अत्यधिक सफल रहे। उन्होंने भारतीयों में भारतीय ज्ञान परम्पराओं के विषय में गलत धारणाएं बैठा दीं। प्राचीन भारतीय ज्ञान केवल धार्मिक, आध्यात्मिक, कर्मकांडों का वर्णन करने वाला, पूजा, व्रत, उपासना का वर्णन करने वाला है। उसका प्रत्यक्ष जीवन से कोई सम्बंध नहीं है। आज के संसार में उसकी उपयोगिता शून्य है, ऐसी गलत धारणा सामूहिक जनमानस में बैठा दी गई। उससे भारतीय सनातन वैदिक ज्ञान उपहास और उपेक्षा का विषय बन गया।

आज की आधुनिक शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजों की – पाश्चात्यों की देन है। केवल हां कहने वाले, आज्ञा पालन करने वाले, लाचार गुलाम तैयार करने वाली ऐसी शिक्षा व्यवस्था बन गई है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ने जीवन लक्ष्यहीन, तेजस्विता और आत्मविश्वास से रहित, क्षमता और कौशल के अभाव वाली पीढ़ियों का निर्माण किया है। दिशाहीन, एकांगी, भटकी हुई, भ्रमित ऐसी युवा पीढ़ी आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का परिणाम है। नैतिकता, आध्यात्मिकता और मानसिक शक्ति का अभाव इस शिक्षा पद्धति ने उत्पन्न किया है। ऐसे में राष्ट्रीय शैक्षिक नीति में भारतीय ज्ञान परम्पराओं का समावेश एक क्रांतिकारी घटना है। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के पुनरुत्थान की दिशा में यह पहला कदम है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मार्गदर्शक सूत्रों के अनुसार सम्पूर्ण शिक्षा क्षेत्र में भारतीय ज्ञान परम्पराओं का विभिन्न पहलुओं से अध्ययन प्रारम्भ हो गया है। निश्चित रूप से यह अत्यंत कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्य है। 2020 से 2025 तक इन 5 वर्षों में विभिन्न प्रकार के प्रयोग हो रहे हैं। प्रशिक्षण और उपक्रम कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

इसमें अखिल भारतीय तकनीकी संस्थान में आई. के. एस. नामक विभाग बनाया गया। उनके द्वारा कुछ सम्मेलनों का आयोजन किया गया। कुछ प्रदर्शनियां और प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए छात्रवृत्ति योजनाएं चलाई गईं। महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में प्राध्यापकों के लिए 3 दिवसीय / 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए। मालवीय मिशन टीचर ट्रेनिंग कार्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परम्परा प्रशिक्षण को शामिल किया गया। तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में भी आई. के. एस. का स्वतंत्र विभाग बनाया गया। प्रत्येक महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में आई. के. एस. विभाग और आई. के. एस. समन्वयक की संरचना बनाई गई। उनके द्वारा सभाओं, सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। तथा आई. आई. टी., आई. आई. एम. आदि संस्थाओं ने भी इसमें पहल की है। इससे भारतीय ज्ञान परंपराओं के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। सोशल मीडिया पर भी अनेक प्रकार के कार्यक्रम, पॉडकास्ट हो रहे हैं। उनके द्वारा भी भारतीय ज्ञान परंपराओं के प्रचार–प्रसार में सहयोग मिल रहा है।

परंतु इन सबमें कमी यह है कि सरकार द्वारा अनिवार्य किए जाने के कारण ये उपक्रम चल रहे हैं। सरकारी आर्थिक सहायता मिल रही है, इसलिए सभाएं और सम्मेलन हो रहे हैं। भारतीय ज्ञान परम्पराओं को समझकर, उनका अध्ययन करके उनका वैज्ञानिक रूप से अंगीकार नहीं किया जा रहा। महाविद्यालयों के प्राध्यापकों और अन्य कर्मचारियों को आई. के. एस. एक अतिरिक्त कार्य का बोझ लगता है। इन सभी में भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो गई है। भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति जागरूकता तो आ रही है। परंतु अपेक्षित लक्ष्य की ओर प्रगति होती नहीं दिखती। एक प्रकार की लापरवाही और सतही दृष्टिकोण दिखाई दे रहा है। इसका कारण भारतीय ज्ञान परम्पराओं के प्रति नकारात्मक सोच है। इसमें किसी का दोष नहीं है। कुल मिलाकर आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ही इस प्रकार एकांगी बन गई है, यही वास्तविकता है।

इसके साथ ही भारतीय ज्ञान परम्पराएं अर्थात सनातन वैदिक आर्य हिंदू भारतीय ज्ञानपरम्पराएं हैं, इसका दृढ़तापूर्वक प्रतिपादन करने की आवश्यकता है।

व्यर्थ में धर्मनिरपेक्षता के विचार की बाधा बीच में लाने की आवश्यकता नहीं है। इंडिया कहने पर हमारा विचार अधिकतम पिछले दो–तीन सौ वर्षों तक जाता है। भारत कहने पर हमारा विचार रामायण–महाभारत से लेकर सत्य, कृत, द्वापर और कलि जैसे महायुगों के, कल्प और मन्वंतर के इतिहास तक, वैदिक काल तक हजारों–लाखों वर्षों तक पीछे चला जाता है। भारतीय ज्ञान परम्पराएं सही अर्थों में वैज्ञानिक ज्ञान परम्पराएं हैं और इसीलिए उनका अस्तित्व हजारों वर्षों से है, यह हम सभी को ध्यान में रखना आवश्यक है। ✦✦✦

विद्यालय सरस्वती का एक मंदिर होता है जहां ज्ञान की अखंड दीपशिखाएं प्रज्जवलित होती हैं, लेकिन जब ज्ञान के साथ वहां शिक्षा का व्यवसायीकरण होने लगे तो यह एक गम्भीर, सोचनीय व चिंतनीय विषय है।

शिक्षा का व्यवसायीकरण

भारत में शिक्षा व्यवस्था का व्यवसायीकरण जिस स्तर पर हो रहा है, वह क्या भविष्य के लिए सोचनीय व चिंताजनक नहीं है। हमारे यहां शिक्षा को लेकर जिस तरह की गुरु-शिष्य की परम्परा रही, जिससे निकली मेधाशक्ति से पूरा विश्व आलोकित हुआ है, आज हम उस परम्परा से इतर जा रहे हैं। नए सत्र की शुरुआत होते ही आज कई स्कूल शिक्षा देने के साथ-साथ महंगे ड्रेस, पुस्तकें और अन्य सामग्री केवल अपने निर्धारित माध्यम से खरीदने का दबाव बनाते हैं। इन सभी के लिए प्राथमिक कक्षाओं में अधिकतर स्कूलों की ओर से लगभग 10 से 50 हजार रु. तक शुल्क के रूप में धन उगाही की जा रही है। हालांकि केंद्र सरकार के साथ राज्य सरकारें भी इन पर सख्ती बरतने के लिए दबाव बनाती है, किंतु असरदार कार्रवाई न होने से यह स्थिति शिक्षा को सेवा से हटाकर एक व्यापार का रूप देती है। स्कूल संचालन से जुड़े लोगों को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को ज्ञान, संस्कार और व्यक्तित्व प्रदान करना होना चाहिए, न कि अभिभावकों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ डालना। ड्रेस और पुस्तकों के नाम पर बनाई गई यह व्यवस्था एक प्रकार की एकाधिकार (मोनोपॉली) प्रणाली को जन्म देती है क्योंकि अभिभावकों के पास कोई विकल्प नहीं होता और उन्हें ऊंची कीमत पर वही सामग्री खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जबकि वही वस्तुएं बाजार में कम कीमत पर उपलब्ध होती हैं, फिर भी स्कूलों द्वारा बाहर से खरीदने की अनुमति नहीं दी जाती। यह स्पष्ट संकेत है कि शिक्षा के साथ व्यावसायिक हित गहराई से जुड़ चुके हैं। यह विद्यालयी एकाधिकार संगठित भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा देता है, इससे न सिर्फ विद्यालयी कार्यक्रम के नाम पर मनमाने शुल्क वसूले जाते है बल्कि विद्यार्थियों के साथ ही अभिभावकों का भी बड़े स्तर पर आर्थिक शोषण किया जाता है।

शिव भूषण तिवारी

व्यक्तित्व निर्माण ही शिक्षा का मूल उद्देश्य

शिक्षा का लक्ष्य पहले एक अच्छा मानव बनाना है, ऐसा व्यक्ति जो एक जिम्मेदार नागरिक, कुशल कर्मी और संवेदनशील समाज का हिस्सा बनें। शिक्षा के माध्यम से ही बच्चों में नैतिकता, अनुशासन, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी जैसे गुण विकसित होते हैं। एक पंक्ति जो अधिकतर हम सब सुनते रहते है कि व्यक्ति निर्माण से ही समाज निर्मित होता है और निर्मित समाज से ही कोई राष्ट्र सशक्त व समृद्ध होता है, किंतु वर्तमान में स्कूली शिक्षा व्यवस्था में आर्थिक चाह की बढ़ती यह प्रवृत्ति केवल समाज के लिए एक संकट नहीं है बल्कि शिक्षा के मूल उद्देश्य के भी विपरीत है क्योंकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञान देना या नौकरी तक ही नहीं बल्कि सबसे पहले एक अच्छा मानव का निर्माण करना होता है। आज हमारे समाज में बदलती व्यवस्था के साथ ही शिक्षा का निहितार्थ व्यक्ति की सफलता से जोड़ दिया जाता है, किसी भी शिक्षण संस्था में कुछ सफल लोगों के बारे में दिखाकर, सुनाकर विद्यार्थियों को उनके जैसा ही बनने का दबाव बनाया जाता है। उनकी व्यक्तिगत क्षमता व मेधा को निखारने के बजाए अपने बने बनाए ढांचागत उद्देश्यों को थोपा जाता है।

जापान में शिक्षा का मतलब व्यवहारिक ज्ञान व व्यक्तित्व निर्माण

जापान की शिक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा आकर्षण यह है कि वहां पढ़ाई केवल पुस्तकों

तक सीमित नहीं रहती बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाई जाती है। स्कूलों में 'ओसोजी' नामक परम्परा में बच्चे शिक्षकों के मार्गदर्शन में स्वयं कक्षा, गलियारे, बाथरूम और मैदान की सफाई करते हैं। इससे बच्चों में यह भावना विकसित होती है कि कोई भी काम छोटा नहीं होता और सार्वजनिक स्थानों की जिम्मेदारी सभी की होती है। यह प्रक्रिया उनमें आत्मसम्मान और अपनत्व का भाव भी जगाती है। इसी तरह 'क्यूशोकू' यानी दोपहर का भोजन भी शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। बच्चे स्वयं भोजन लाते, परोसते और बाद में सफाई भी करते हैं। भोजन से पहले इतादा किमासु और बाद में गोचिसो सामादेशिता कहकर आभार व्यक्त करना सिखाया जाता है। इससे उनमें अनुशासन, कृतज्ञता और भोजन के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है। साथ ही बच्चों को यह भी बताया जाता है कि भोजन कहां से आया है, जिससे वे स्थानीय उत्पादन और प्रकृति के महत्व के साथ ही अपनी मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता का भाव आत्मसात करते हैं। इसके अलावा बच्चों में आत्मनिर्भरता विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वे समूह में स्कूल जाते हैं, एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं और बिना किसी निगरानी के अनुशासन बनाए रखते हैं। पौधारोपण जैसी गतिविधियों के माध्यम से उन्हें प्रकृति से जुड़ाव और जिम्मेदारी का अनुभव कराया जाता है। इस प्रकार जापान की शिक्षा प्रणाली बच्चों को केवल पढ़ा-लिखा नहीं बल्कि जिम्मेदार, अनुशासित और संवेदनशील नागरिक बनाती है। यही शिक्षा को जीवन से जोड़ने का सच्चा उदाहरण है।

एक जिम्मेदार नागरिक ही विकसित भारत का निर्माता

एक अच्छा मानव बनने का अर्थ है कि व्यक्ति सही और गलत के बीच अंतर समझे, दूसरों के प्रति सम्मान का भाव रखे और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाए। जब किसी व्यक्ति के भीतर ये गुण विकसित होते हैं, तभी वह एक अच्छा नागरिक बन पाता है। ऐसा नागरिक देश के कानूनों का पालन करता है, समाज में शांति और सौहार्द बनाए रखने में योगदान देता है और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाता है। इसी प्रकार एक अच्छा मानव ही एक अच्छा व्यवसायी बन सकता है। व्यवसाय केवल लाभ कमाने का माध्यम नहीं बल्कि समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने का भी जरिया होता है। यदि व्यवसायी निष्ठावान और नैतिक मूल्यों से युक्त होगा तो वह समाज के लिए उपयोगी कार्य करेगा और विश्वास का निर्माण करेगा।

✦✦✦

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

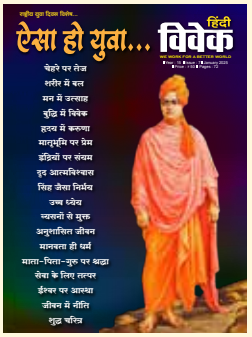

हिंदी विवेक

" We Work For A Better World"

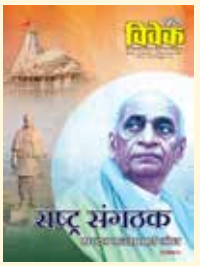

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर – 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई – 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

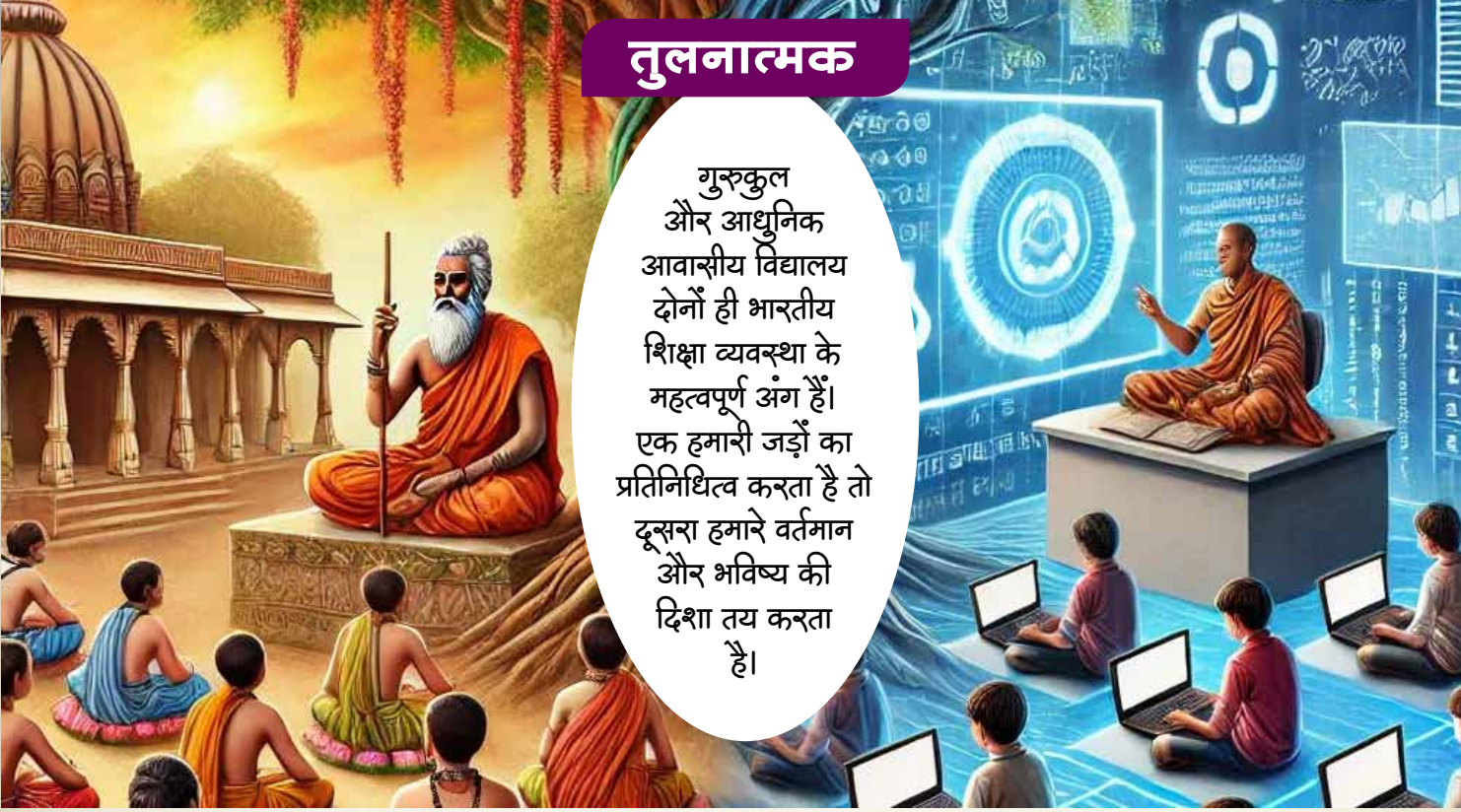

तुलनात्मक

गुरुकुल और आधुनिक आवासीय विद्यालय दोनों ही भारतीय शिक्षा व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग हैं। एक हमारी जड़ों का प्रतिनिधित्व करता है तो दूसरा हमारे वर्तमान और भविष्य की दिशा तय करता है।

गुरुकुल से आवासीय विद्यालय

भारत की शिक्षा परम्परा अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और बहुआयामी रही है। समय के साथ समाज, संस्कृति, विज्ञान और तकनीक में आए परिवर्तनों के अनुसार शिक्षा पद्धति भी निरंतर विकसित होती रही है। प्राचीन काल में प्रचलित गुरुकुल पद्धति और आज के आवासीय विद्यालय भी विकास यात्रा के दो महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। दोनों ही प्रणालियां विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को लक्ष्य बनाती हैं, परंतु इनके स्वरूप, कार्यप्रणाली और दृष्टिकोण में कई महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देते हैं। इन दोनों पद्धतियों का यहां तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

गुरुकुल पद्धतिः भारतीय संस्कृति की मूल धारा

गुरुकुल पद्धति प्राचीन भारत की शिक्षा व्यवस्था का आधार थी। इसमें विद्यार्थी (शिष्य) अपने गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। यह केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सीखने का केंद्र भी था।

मुख्य विशेषताएं

आवासीय व्यवस्थाः शिष्य गुरु के साथ आश्रम में ही निवास करते थे।

गुरु-शिष्य सम्बंधः अत्यंत आत्मीय, पारिवारिक और श्रद्धा पर आधारित।

समानता का भावः सभी शिष्य, चाहे राजा का पुत्र हो या सामान्य व्यक्ति, समान रूप से रहते और सीखते थे।

लवकुश तिवारी

दोनों की विशेषताएं और सीमाएं

* गुरुकुल की विशेषताएं
* उच्च नैतिकता और चरित्र निर्माण।
* आत्मनिर्भरता और अनुशासन।
* प्रकृति के साथ संतुलन।
* सीमाएं
* सीमित विषय और ज्ञान क्षेत्र।
* वैज्ञानिक और तकनीकी विकास का अभाव।
* सभी के लिए सुलभ नहीं।

आवासीय विद्यालय की विशेषताएं

* व्यापक और आधुनिक ज्ञान।
* करियर उन्मुख शिक्षा।
* तकनीकी और वैश्विक दृष्टिकोण।
* सीमाएं
* व्यक्तिगत ध्यान की कमी।
* नैतिक शिक्षा का अपेक्षाकृत अभाव।
* अत्यधिक प्रतिस्पर्धा और तनाव।

व्यावहारिक शिक्षा: वेद, उपनिषद, शास्त्रों के साथ-साथ धनुर्विद्या, कृषि, पशुपालन, नैतिकता और जीवन कौशल सिखाए जाते थे।

अनुशासन और संयम: ब्रह्मचर्य, तप, त्याग और आत्मसंयम पर विशेष बल।

प्रकृति के निकटता: आश्रम प्रायः प्राकृतिक वातावरण में स्थित होते थे, जिससे विद्यार्थी प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते थे।

गुरुकुल का उद्देश्य केवल विद्वान बनाना नहीं बल्कि एक आदर्श, चरित्रवान और समाजोपयोगी नागरिक तैयार करना था।

आधुनिक आवासीय विद्यालय : समकालीन शिक्षा का स्वरूप

गुरुकुल पद्धति
आवासीय विद्यालय शिक्षा का स्वरूप

* आध्यात्मिक, नैतिक और व्यावहारिक
* वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यावसायिक
* गुरु-शिष्य संबंध
* अत्यंत आत्मीय और व्यक्तिगत
* औपचारिक और सीमित
* जीवनशैली
* सादगी, संयम और प्राकृतिक
* आधुनिक, सुविधाजनक
* शिक्षण विधि
* मौखिक, अनुभव आधारित
* पुस्तकीय, तकनीकी आधारित
* उद्देश्य
* चरित्र निर्माण और आत्मज्ञान
* करियर निर्माण और प्रतिस्पर्धा
* पर्यावरण
* प्रकृति के निकट
* शहरी या अर्ध-शहरी
* दोनों की शिक्षा पद्धति का स्वरूप

आज के आवासीय विद्यालय, जैसे कि सैनिक स्कूल, नवोदय विद्यालय या निजी बोर्डिंग स्कूल, आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत संचालित होते हैं। इनमें विद्यार्थी विद्यालय परिसर में ही रहते हैं और आधुनिक सुविधाओं के साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं।

मुख्य विशेषताएं

सुसज्जित परिसर: छात्रावास, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएं, खेल परिसर आदि।

व्यवस्थित पाठ्यक्रम: राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बोर्डों (सीबीएसई, आईसीएसई, आईबी आदि) के अनुसार शिक्षा।

प्रशिक्षित शिक्षक: विषय विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा अध्यापन।

तकनीकी साधन: स्मार्ट क्लास, डिजिटल लर्निंग, इंटरनेट आदि का उपयोग।

व्यक्तित्व विकास: खेल, सांस्कृतिक गतिविधियां, नेतृत्व कौशल, संवाद कौशल पर जोर।

अनुशासन: समयबद्ध दिनचर्या और नियमों का पालन।

इन विद्यालयों का उद्देश्य विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना और आधुनिक ज्ञान से सम्पन्न बनाना है।

गुरुकुल और आवासीय विद्यालय में अंतर

दोनों पद्धतियों का मूल उद्देश्य शिक्षा देना है, परंतु उनके दृष्टिकोण और कार्यशैली में स्पष्ट अंतर है।

गुरुकुल की शिक्षा पद्धति

* संवादात्मक और स्मरण आधारित।
* गुरु द्वारा व्यक्तिगत मार्गदर्शन।
* अनुभव और अभ्यास पर आधारित शिक्षण।
* नैतिक मूल्यों का समावेश।

आधुनिक आवासीय विद्यालय की शिक्षा पद्धति

* कक्षा आधारित और पाठ्यपुस्तक केंद्रित।
* परीक्षा और मूल्यांकन प्रणाली।
* तकनीकी उपकरणों का उपयोग।
* परियोजना, प्रयोग और शोध पर आधारित शिक्षण।

वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिकता

आज के समय में केवल आधुनिक शिक्षा या केवल पारम्परिक शिक्षा पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता है कि दोनों प्रणालियों के श्रेष्ठ तत्वों का समन्वय किया जाए। जहां गुरुकुल से हमें नैतिकता, अनुशासन और जीवन मूल्यों की प्रेरणा मिलती है, वहीं आधुनिक विद्यालय हमें विज्ञान, तकनीक और वैश्विक ज्ञान प्रदान करते हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 भी इसी दिशा में प्रयासरत है, जिसमें समग्र शिक्षा, मूल्य आधारित शिक्षा और कौशल विकास पर बल दिया गया है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं बल्कि एक श्रेष्ठ मानव का निर्माण करना है और इस दिशा में गुरुकुल और आधुनिक आवासीय विद्यालय दोनों की अपनी-अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है।

✦✦✦

सम्भावनाएं

10वीं के बाद कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय कौशल विकास निगम, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, स्किल इंडिया मिशन और राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान जैसी संस्थाएं और योजनाएं कार्यरत हैं, डालते हैं उस पर एक दृष्टि।

निपुण बनातीं ये संस्थाएं

तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान का नेटवर्क सबसे अधिक व्यापक है। देशभर में विभिन्न आईटीआई संस्थानों में अनेक ट्रेड्स में प्रशिक्षण दिया जाता है। उदाहरण के लिए शासकीय आईटीआई पूसा, इलेक्ट्रिशियन, फिटर और मशीनिस्ट ट्रेड्स के लिए प्रसिद्ध है, जबकि शासकीय आईटीआई मुंबई में टर्नर, वेल्डर और ऑटोमोबाइल मैकेनिक जैसे कोर्स संचालित होते हैं। शासकीय आईटीआई भोपाल में कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं प्रोग्रामिंग सहायक, इलेक्ट्रॉनिक्स मैकेनिक और डीजल मैकेनिक जैसे ट्रेड्स उपलब्ध हैं। शासकीय आईटीआई चेन्नई, रेफ्रिजरेशन एवं एयर कंडीशनिंग तथा इलेक्ट्रिकल ट्रेड्स के लिए जाना जाता है, जबकि शासकीय आईटीआई कोलकाता में ड्राफ्ट्समैन और प्लम्बर जैसे कोर्स लोकप्रिय हैं। उन्नत प्रशिक्षण संस्थान, हैदराबाद उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करता है, विशेषकर सीएनसी मशीनिंग और औद्योगिक स्वचालन के क्षेत्र में।

डॉ. ताड़केश्वर नाथ मिश्र

आईटीआई के अतिरिक्त केंद्रीय प्लास्टिक अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, प्लास्टिक इंजीनियरिंग और मोल्ड डिजाइन में विशेषज्ञता प्रदान करता है, जबकि फुटवियर डिजाइन एवं विकास संस्थान फुटवियर डिजाइन और रिटेल मैनेजमेंट में प्रशिक्षण देता है। इंडो जर्मन टूल रूम और केंद्रीय टूल रूम एवं प्रशिक्षण केंद्र टूल इंजीनियरिंग और प्रोडक्शन टेक्नोलॉजी में उन्नत कोर्स संचालित करते हैं। इसी प्रकार पॉलिटेक्निक संस्थान तकनीकी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण आधार हैं। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त शासकीय पॉलिटेक्निक मुंबई, पूसा पॉलिटेक्निक, शासकीय पॉलिटेक्निक भोपाल, शासकीय पॉलिटेक्निक पुणे और सरदार वल्लभभाई पटेल पॉलिटेक्निक जैसे संस्थानों में सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, कम्प्यूटर साइंस और ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग के डिप्लोमा कोर्स संचालित होते हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में 10वीं के बाद करियर की सम्भावनाएं लगातार बढ़ रही हैं। पैरामेडिकल कोर्स जैसे मेडिकल लैब टेक्नीशियन, एक्स-रे टेक्नीशियन, डायलिसिस टेक्नीशियन और नर्सिंग सहायक के लिए कई प्रतिष्ठित संस्थान उपलब्ध हैं। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के अलावा भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी प्राथमिक चिकित्सा और नर्सिंग प्रशिक्षण प्रदान करता है। अपोलो हॉस्पिटल्स एजुकेशनल एंड रिसर्च फाउंडेशन और फोर्टिस हेल्थकेयर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट विभिन्न पैरामेडिकल कोर्स संचालित करते हैं। मैक्स हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट और मेदांता मेडिसिटी ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट डायलिसिस और इमरजेंसी केयर से सम्बंधित प्रशिक्षण देते हैं। इसके अतिरिक्त मणिपाल उच्च शिक्षा अकादमी संस्थान भी हेल्थकेयर और पैरामेडिकल क्षेत्रों में

प्रतिष्ठित कोर्स प्रदान करते हैं।

हॉस्पिटैलिटी और पर्यटन क्षेत्र में होटल प्रबंधन संस्थान, ओबेरॉय सेंटर ऑफ लर्निंग एंड डेवलपमेंट, वेलकम ग्रुप ग्रेजुएट स्कूल ऑफ होटल एडमिनिस्ट्रेशन, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट और एमिटी स्कूल ऑफ हॉस्पिटैलिटी जैसे संस्थानों के साथ-साथ होटल प्रबंधन संस्थान पूसा, होटल प्रबंधन संस्थान मुंबई, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ हॉस्पिटैलिटी, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, स्कूल ऑफ होटल मैनेजमेंट, मणिपाल स्कूल ऑफ होटल मैनेजमेंट, बनारसीदास चांदीवाला इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, सुभाष चंद्र बोस इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, यूईआई ग्लोबल, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट और आपीजे इंस्टीट्यूट ऑफ हॉस्पिटैलिटी जैसे संस्थान भी इस क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

इन संस्थानों में फूड प्रोडक्शन, बेकरी और कंफेक्शनरी, फ्रंट ऑफिस मैनेजमेंट, हाउसकीपिंग, हॉस्पिटैलिटी एडमिनिस्ट्रेशन, ट्रैवल एंड टूरिज्म मैनेजमेंट, एयरलाइन कैटरिंग, क्रूज लाइन ऑपरेशंस और इवेंट मैनेजमेंट जैसे विविध कोर्स संचालित होते हैं। कई संस्थान उद्योग के साथ प्रत्यक्ष जुड़ाव रखते हैं, जहां छात्रों को प्रशिक्षण के दौरान ही होटल, रिसॉर्ट, एयरलाइन और पर्यटन कम्पनियों में इंटर्नशिप के अवसर मिलते हैं। इससे छात्रों को वास्तविक कार्य अनुभव प्राप्त होता है और वे राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोजगार के लिए तैयार हो जाते हैं।

रचनात्मक और डिजाइन क्षेत्रों में राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, पर्ल अकादमी, एमआईटी इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन और सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के अतिरिक्त एमिटी स्कूल ऑफ डिजाइन, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ डिजाइन, जेडी इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन डिजाइन, आर्च कॉलेज ऑफ डिजाइन एंड बिजनेस, वोग इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट एंड डिजाइन, यूनाइटेड वर्ल्ड इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन और सृष्टि इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट, डिजाइन एंड टेक्नोलॉजी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये संस्थान फैशन डिजाइन, टेक्सटाइल डिजाइन, ग्राफिक डिजाइन, एनीमेशन डिजाइन, इंटीरियर डिजाइन, प्रोडक्ट डिजाइन, विजुअल कम्युनिकेशन और यूजर एक्सपीरियंस डिजाइन जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। यहां छात्रों को न केवल सैद्धांतिक ज्ञान दिया जाता है बल्कि लाइव प्रोजेक्ट्स, इंडस्ट्री इंटर्नशिप और पोर्टफोलियो विकास के माध्यम से व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान किया जाता है, जिससे वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम बनते हैं।

डिजिटल और मीडिया क्षेत्र में एरीना एनीमेशन, माया अकादमी ऑफ एडवांस्ड सिनेमैटिक्स, जी इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव आर्ट, फ्रेमबॉक्स एनीमेशन एंड विजुअल इफेक्ट्स और एनिमास्टर अकादमी के साथ-साथ बैकस्टेज पास इंस्टीट्यूट ऑफ गेमिंग एंड टेक्नोलॉजी, एशियन अकादमी ऑफ फिल्म एंड टेलीविजन, व्हिस्लिंग वुड्स इंटरनेशनल, प्रिज़्म मल्टीमीडिया, आईकैट डिजाइन एंड मीडिया कॉलेज, जीका एनीमेशन इंस्टीट्यूट और टूनज अकादमी जैसे संस्थान भी उल्लेखनीय हैं। ये संस्थान 2डी और 3डी एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेम डिजाइन, फिल्म निर्माण, वीडियो सम्पादन, ग्राफिक डिजाइन, मोशन ग्राफिक्स और डिजिटल कंटेंट क्रिएशन जैसे कोर्स प्रदान करते हैं। इन क्षेत्रों में प्रशिक्षण के दौरान छात्रों को अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर, स्टूडियो वातावरण और इंडस्ट्री प्रोजेक्ट्स के साथ काम करने का अवसर मिलता है, जिससे वे फिल्म, टेलीविजन, विज्ञापन, गेमिंग और डिजिटल मीडिया उद्योग में सफलतापूर्वक प्रवेश कर सकते हैं।

✦✦✦

कहानी

शिक्षक का सम्मान

नगर निगम के पुराने कार्यालय के बाहर उस दिन एक अजीब सा दृश्य था। गेट पर खड़े गार्ड ने एक बुजुर्ग आदमी को रोकते हुए कहा- बाबूजी, यदि काम जल्दी करवाना है तो अंदर वाले बाबू को थोड़ा 'चाय पानी' देना पड़ेगा, नहीं तो महीनों चक्कर लगाते रहिए।

बूढ़े आदमी ने थकी हुई आंखों से उसकी ओर देखा। बेटा मैंने पूरा जीवन बच्चों को निष्ठा सिखाई है, अब बुढ़ापे में रिश्वत देकर अपना काम कैसे करवा लूं?

गार्ड हंस पड़ा और कहा- बाबूजी आदर्श और निष्ठा पुस्तकों में अच्छी लगती है नगर निगम में नहीं।

बूढ़े आदमी ने कुछ नहीं कहा। वह धीरे-धीरे अंदर चले गए। वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे, वह थे मास्टर दीनानाथ। 40 वर्ष तक उन्होंने इसी शहर के बच्चों को पढ़ाया था। उनकी डांट और उनके संस्कारों से सैकड़ों बच्चे बड़े होकर अधिकारी बने थे, पर आज उन्हें अपने ही शहर के कार्यालय में एक आम आदमी की तरह लाइन में खड़ा होना पड़ रहा था।

घर से निकलते समय रुक्मिणी जी ने उन्हें रोका भी था। अजी आप क्यों जा रहे हैं? आपके कितने विद्यार्थी आज बड़े अफसर बन गए होंगे। किसी को फोन कर दीजिए।

दीनानाथ जी मुस्कुराए थे। सुमित्रा गुरु का काम पढ़ाना होता है, एहसान जताना नहीं। नगर निगम के अंदर लम्बी लाइन लगी थी। कोई फाइल लेकर खड़ा था। कोई परेशान होकर कह रहा था-3 महीने से चक्कर लगा रहा हूं बिना पैसे दिए फाइल आगे नहीं बढ़ती। दीनानाथ जी चुपचाप लाइन के आखिरी छोर पर जाकर खड़े हो गए। उनकी आयु 70 वर्ष थी। घुटनों में दर्द था, लेकिन उनके उसूल अभी भी जवान थे। तभी अचानक एक कर्मचारी तेजी से बाहर आया। वह भीड़ में किसी को ढूंढ रहा था। अचानक उसकी दृष्टि दीनानाथ जी पर पड़ी। वह तुरंत उनके पास आया बोला आप मास्टर दीनानाथ जी हैं? दीनानाथ जी ने सिर हिला कर हां बोला ... सर आप यहां लाइन में क्यों खड़े हैं? दीनानाथ जी चौंक गए।

बेटा, मेरी बारी आएगी तब ही जाऊंगा। कर्मचारी बोला- नहीं सर आपको लाइन में खड़े होने की आवश्यकता नहीं है। साहब ने आपको अंदर बुलाया है। पूरा हॉल यह देखकर हैरान रह गया।

अंदर बड़े केबिन का दरवाजा खुला। एक रोबदार अधिकारी बाहर आए। जैसे ही उनकी दृष्टि दीनानाथ जी पर पड़ी वे तेजी से उनकी ओर बढ़े और अचानक वह अधिकारी उनके सामने दोनों हाथ जोड़कर झुक गया। पूरा कार्यालय स्तब्ध रह गया।

मास्टर जी आपने अपने इस नालायक छात्र को पहचाना? दीनानाथ जी ने चश्मा ठीक किया। कुछ पल तक ध्यान से देखा। फिर उनकी आंखों में पहचान की चमक आ गई।

तुम राघव हो? अधिकारी की आंखों से आंसू बहने लगे। हां सर मैं वही राघव हूं, वही शरारती लड़का जो हमेशा स्कूल से

भाग जाता था। दीनानाथ जी हल्का सा मुस्कुराए और जिसे मैंने एक दिन छड़ी से बहुत पीटा था। राघव ने सिर झुका लिया। सर यदि उस दिन आपकी छड़ी मेरी पीठ पर नहीं पड़ी होती तो कदाचित् आज हथकड़ी मेरे हाथों में होती। पूरा कमरा शांत था। राघव आगे बोला- सर आपको कदाचित् याद भी नहीं होगा मेरे पिता के गुजर जाने के बाद जब मेरे पास बोर्ड परीक्षा की फीस भरने के पैसे नहीं थे तब आपने बिना किसी को बताए अपनी जेब से मेरी फीस भरी थी। राघव कुछ क्षण तक चुप खड़ा रहा। इन्होंने चुपचाप मेरी मां के हाथ में पैसे रखे और मुझसे कहा- 'राघव बेटा गरीबी तुम्हारी मजबूरी हो सकती है, लेकिन हार मान लेना तुम्हारा निर्णय होगा।' तुम कभी हार मत मानना, एक दिन तुम अवश्य बड़े आदमी बनोगे। राघव की आवाज कांपने लगी। सर उस दिन आपने केवल मेरी फीस नहीं भरी थी, आपने मेरे टूटे हुए सपनों को फिर से जोड़ दिया था, फिर वह धीरे-धीरे घुटनों के बल बैठ गया। उसने दीनानाथ जी के पैर पकड़ लिए।

फिर राघव खड़ा हुआ और पूरे हॉल की ओर मुड़ा। उसकी आवाज अब मजबूत थी। आज से इस कार्यालय में एक नया नियम होगा।

सब लोग ध्यान से सुनने लगे। जिस शहर के शिक्षक अपने बुढ़ापे में लाइन में खड़े हों, उस शहर को खुद पर शर्म आनी चाहिए। फिर उसने कहा- आज से इस नगर निगम में कोई भी शिक्षक या बुजुर्ग लाइन में नहीं खड़ा होगा और यदि कोई कर्मचारी किसी से रिश्वत लेते पकड़ा गया तो समझ लीजिए उसकी नौकरी उसी दिन समाप्त।

पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा, लेकिन कई लोगों की आंखों में आंसू थे। जब दीनानाथ जी बाहर निकलने लगे तो पूरा कार्यालय अचानक खड़ा हो गया। किसी ने कुछ नहीं कहा, लेकिन हर कर्मचारी ने सिर झुका लिया। यह एक शिक्षक के सम्मान में मौन प्रणाम था।

जब दीनानाथ जी घर पहुंचे तो रुक्मिणी जी ने पूछा-

इतनी जल्दी काम कैसे हो गया? दीनानाथ जी कुछ पल चुप रहे।

फिर धीरे से बोले- काम तो हो गया सुमित्रा, लेकिन आज मुझे बहुत बड़ी सम्पत्ति मिल गई।

रूकमिणी जी ने पूछा- कौन सी दौलत?

दीनानाथ जी की आंखें भर आईं। उन्होंने आसमान की ओर देखा और कहा- आज मुझे मेरी 40 वर्ष की तपस्या का ब्याज मिल गया। मास्टर जी को लगा था कि उनके पढ़ाए हुए बच्चे उन्हें भूल गए होंगे, लेकिन आज उन्हें पता चला कि उनके संस्कार किसी के दिल में मंदिर बनाकर बैठे हैं। ✦✦✦

अंजली तागडे और विराग पाचपोर को मिलेगा राजाभाऊ नेने पुरस्कार

पुणे। साप्ताहिक विवेक के पूर्व सम्पादक कै. राजाभाऊ नेने की स्मृति में इस वर्ष राजाभाऊ नेने स्मृति पुरस्कार वरिष्ठ पत्रकार विराग पाचपोर और विश्व संवाद केंद्र की सम्पादक अंजली तागडे को देने की घोषणा की गई है। विदित हो कि पत्रकारिता क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रतिवर्ष यह पुरस्कार दिया जाता है। पुरस्कार वितरण समारोह आगामी 13 अप्रैल संध्या 5 बजे चंचल स्मृति वडाळा (मुंबई) में किया जाएगा। ज्ञातव्य हो कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पश्चिम क्षेत्र प्रचार प्रमुख प्रमोद बापट के करकमलों द्वारा स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफळ और 25 हजार की राशि पुरस्कार स्वरुप दिया जाएगा। इस समारोह में पद्मश्री रमेश पतंगे द्वारा लिखित 'डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर के संवैधानिक चिंतन' पुस्तक का विमोचन भी किया जाएगा।

मुम्बई महानगरपालिका के स्वीकृत नगरसेवक प्रतीक कर्पे और मुंबई विद्यापीठ के आजीवन शिक्षण और विस्तार विभाग के संचालक प्राचार्य डॉ. बळीराम गायकवाड के करकमलों द्वारा पुस्तक का विमोचन किया जाएगा। 'विवेक' पुस्तक विभाग की व्यवस्थापक शीतल खोत ने पाठकों से कार्यक्रम में उपस्थित रहने का अनुरोध किया है।

विराट हिंदू सम्मेलन का आयोजन

पुणे। कर्वेनगर स्थित मधुसंचय गणपति ट्रस्ट व अलंकार दत्त मंदिर समिति द्वारा नव सह्याद्री वस्ती में विराट हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य सुहासराव हिरेमठ ने कहा कि सकल हिंदू समाज द्वारा देशभर में विभिन्न स्थानों पर आयोजित हिंदू सभाओं के कारण हिंदू समाज में हिंदू धर्म की भावना जागृत हो रही है। अंग्रेजों ने 150 वर्षों तक हम पर शासन किया और हिंदू समाज को जातियों में विभाजित किया। भले ही हमारी भाषा व पहनावा अलग हो, पर हम ऐसी सभाओं के माध्यम से यह दिखा रहे हैं कि 'हम हिंदू एक हैं'। हिंदू समुदाय को विश्व कल्याण और विश्व शांति के लिए एकजुट होना चाहिए और साथ ही साथ सभी को राष्ट्र के विकास में योगदान देना चाहिए। इस दौरान राष्ट्र सेविका समिति की वैष्णवी सहस्त्रबुद्धे ने भी अपने विचार व्यक्त किए। उक्त कार्यक्रम का शुभारम्भ सुरेशराव हिरेमठ, रजनी जोशी, महेश पानसे, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कर्वेनगर संघचालक उदयन पाठक के हाथों दीप प्रज्वलित कर किया गया।

समाज और राष्ट्र में सत्यम, शिवम और सुंदरम की स्थापना करना ही संघ का उद्देश्य - डॉ. मोहन भागवत

नागपुर। रेशीमबाग स्थित डॉ. हेडगेवार स्मृतिमंदिर परिसर में आयोजित कार्यक्रम में नागपुर महानगर के घोष पथक के इतिहास पर आधारित 'राष्ट्र स्वराधना' नामक हस्तलिखित ग्रंथ के लोकार्पण अवसर पर पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के घोषदल में विभिन्न वाद्य यंत्र होते हैं, जिनके स्वर और ध्वनि अलग-अलग होते हुए भी स्वयंसेवक एक ही ताल पर चलते हैं। इससे समन्वय और एकता की भावना विकसित होती है। इस अवसर पर विदर्भ प्रांत संघचालक दीपक तामशेट्टीवार, सह संघचालक श्रीधरजी गाडगे, महानगर संघचालक राजेश लोया उपस्थित आदि उपस्थित थे।

टीजेएसबी सहकारी बैंक लिमिटेड. मल्टी-स्टेट शेड्यूल्ड बैंक
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

₹२५,००० करोड़
की मजबूत नींव पर,
नई ऊंचाइयों
की ओर अग्रसर

७ राज्यों
में उपस्थिति

१६५ शाखाओं
का विस्तृत नेटवर्क

लेखापरीक्षित वित्तीय विवरण

(₹ करोड़ में)

विवरण	३१-०३-२०२६	३१-०३-२०२५
कुल व्यवसाय	२५,३६०	२३,१०५
जमाराशि	१६,२४४	१४,८४९
अग्रिम	९,११६	८,२५६
सकल लाभ	२८७	२५२
निवल लाभ	१५५	१८५
स्वनिधि	१,७७३	१,६३९
सकल अनुत्पादित आस्तियां	३.११%	३.५९%
निवल अनुत्पादित आस्तियां	0.00%	0.00%
पूंजी पर्याप्तता अनुपात	१६.८९%	१७.४८%

www.tjsb.bank.in | ✆ : 022- 48897204